मरने के बाद,
साथ में आने वाले विषयों ।

ब्रह्मर्षि तटवर्ती वीरराघव राव

मरने के बाद, साथ में आने वाले विषयों ।

लेखक : श्री तटवर्ती वीर राघवराव

हिन्दी अनुवादः श्री नागेश्वरराव

For Books Please Contact :
TATAVARTHI VEERA RAGHAVARAO
Tatavarthivari Street, BHIMAVARAM-534201.
W.G.Dist., A.P. Ph: 94403 09812

Rs.80/-

सूची

1. मरने के बाद, साथ में आने वाले विषयों । 3

2. वासनाएं 5

3. संस्कारों 9

4. कर्मों । 21

5. कर्म - अकर्म। 29

6. ध्यान क्या है ? 33

7. कर्म में अकर्म - अकर्म में कर्म 37

8. ज्ञान । 41

9. ज्ञान प्राप्त करने से क्या-क्या लाभ है ? 50

मरने के बाद, साथ में आने वाले विषयों ।

हम सब, पिछले कुछ सालों से कर रहे हैं, ये साधना और ज्ञान, जो प्राप्त कर रहे हैं, इस आध्यात्मिक मार्ग में बहुत आगे बढ़ेंगे। यह सब हमारे आने वाले जन्मों में बहुत ही उपयोग होगा।

आज हम, अगर बहुत सारा पैसे कमाएंगे, यह सब इसी जन्म में भविष्य के लिए लाभ होगा और बहुत सुख दे सकता है ।

इसी प्रकार आज जो हम सीख रहे हैं वह कल, बढ़ोत्तरी के लिए उपयोग आता है। इसी प्रकार अगर आप हाई स्कूल में पास हुए हैं, कॉलेज को जाएंगे और वहां पास होंगे, पोस्ट ग्रेजुएशन में जाएंगे । वह जो कष्ट किया, कभी बेकार नहीं होता है। भविष्य में बढ़ोत्तरी की उपयोग होता है।

इसी प्रकार इस जन्म में हमारा कष्ट का कमाई बेकार नहीं होगा, भविष्य जन्म में बहुत उपयोग होगा । एक क्लास में पास होने के बाद अगला क्लास में जाते हैं । यह नहीं है कि हम पिछले क्लास में जाएंगे। इसी प्रकार इस जन्म में जो भी सीखा है, हासिल किया है, वह अगले जन्म में उपयोग होगा, कुछ भी बेकार नहीं होगा।

जितना यहां कष्ट करेंगे भविष्य में लाभ ही होगा। सब समझते हैं कि मरने के बाद कुछ भी नहीं रहेगा । लेकिन मरने के बाद भी, हम रहेंगे। हमारा

कर्मों और जो भी हासिल किए हैं, वह सब साथ में आएंगे । ज्यादातर लोग समझते हैं कि शरीर को जलाने के बाद, सिर्फ राक ही बचता है । लेकिन समझिए कि, शरीर राक हो जाएगा , मगर हम रहेंगे। जो भी किए हैं, जो भी हासिल किए हैं, वह बेकार नहीं होगा ।

इसलिए हम यहां जो किए हैं, हासिल किए हैं, क्या-क्या सीखे हैं और क्या क्या विषय, हमारे साथ में आएंगे, हम सब जानेंगे ।

जो पिछले जन्मों में किया , वह कर्मों और साथ में आए हुए विषयों से ही अपना वर्तमान जीवन है । इसी प्रकार जो आज हासिल करेंगे अगले जन्म में उपयोग होगा।

इसलिए जानते हैं क्या-क्या विषय है जो हमारे साथ में आने वाले हैं। और हमारे साथ में आने वाले विषय चार प्रकार के होते हैं ।

1. वासनाएं
2. संस्कार
3. कर्मों
4. ज्ञान

यहां वासनाएं है मतलब एक प्रकार अपने इच्छाओं कह सकते हैं। संस्कारों मतलब अपना आदतें । कर्मों मतलब अपना किए हुए काम और बातें। ज्ञान मतलब जो आत्मा को लाभ देने वाले , आत्मा की उन्नति देने वाले।

यह सब अपनी आंखों को नहीं दिखता, लेकिन मरने के बाद , साथ में आएंगे। इन सब के बारे में थोड़ा जानेंगे।

वासनाएं

यह वासनाएं , तीन प्रकार के होते हैं।

1. देह वासन

2. लोक वासन या प्रापंचिक वासन

3. शास्त्रीय वासन

1. देह वासन :- जो भी शरीर को आनंद देता है।

2. लोकवासन :- जो भी मनस को आनंद देता है ।

3. शास्त्रीय वासन :- जो भी बुद्धि को उपयोग करने से आनंद देता है ।

एक प्रकार कह सकते हैं , यह तीन वासनाएं , मानव को लोहे की जंजीर है । यह दुख की निवारण नहीं करते हैं और ना ही मोक्ष प्राप्त कर सकता है ।

इसलिए इन शारीरिक वासनाएं के बारे में और जानते हैं ।

1. देह वासन :- मतलब इस देह के लिए जो भी कर रहे हैं, सब देह वासनाएं है। परिवार , पत्नी, पति, बच्चे , बंधुओं , इनके ऊपर ममकर होना और इन्हीं के लिए जीना । पूरी समय उन्हीं विषयों पर ध्यान देना, यह देह वासन में रहते हैं। जिस से भी पूछेंगे, तो कहेंगे और क्या करना है? वही अपनी जिम्मेदारी समझते हैं। इन्हीं के लिए मरते दम तक कष्ट करते हैं । इसी को देह वासन कहते हैं । इन लोगों को देह के अलावा कुछ सोचते नहीं है। हर वक्त सिर्फ देह सुख और स्वास्थ्य , अलंकार, इनके अलावा कुछ नहीं होता है। यह सब देह वासनाएं हैं ।

एक प्रकार कह सकते हैं कि इस देह, रोगों का भंडार है । और बाधाओं का भंडार है। यह जानना जरूरी है । तब हम इस देह के ऊपर ममकर को कम कर सकते हैं । योगी लोग देह को मल भंडांर कहते हैं।

2. लोक वासन :- यह मनस को संबंधित है । इन लोगों में मन को बहुत

प्रमुखता देते हैं । यह लोग, लोक और लोगों के लिए ज्यादा फिक्र करते हैं। मन संबंधित इच्छाएं ज्यादा होते हैं।

मतलब हर एक व्यक्ति अपनी अलग क्षेत्र में सबसे आगे होने का और अधिक होने का मन रखते हैं । और उन्हीं के लिए काम करते हैं। मतलब एक-एक को अलग-अलग क्षेत्र पर ध्यान देते हैं । उस क्षेत्र में सबसे बड़े होने के लिए अपना पूरा जीवन बिताते हैं । और कुछ लोग संगीत में, खेल में , सिनेमा में , राजनीति में , धन संपत्ति में, ध्यान देते हैं । उनका मन को पसंद करता है और चाहता है।

इसलिए वही काम करते हैं। और इसी को ज्यादा प्रमुखता देते हैं। और पूरा ध्यान इसी पर लगाते हैं । दूसरों के ऊपर ज्यादा ध्यान देते हैं । इसलिए इस को लोक वासन या प्रपंचिक वासन कहते हैं।

3. शास्त्र वासन :- एक प्रकार कह सकते हैं कि यह बुद्धि को संबंधित है । बुद्धि स्थिति पहुंचने वाले लोग यही करते हैं । यह पूरे शास्त्रों को अध्ययन करते हैं । और उन्हीं के ऊपर पूरा भरोसा रखकर , उनके अनुसार जीने का कोशिश करते हैं । इसी को शास्त्र वासन कहते हैं ।

अगर हम देखेंगे तो, जिनका देह वासन है, वह देह संबंधित कर्मों पर ध्यान देते हैं । लोक वासन लोग मन संबंधित कर्मों में लीन हैं। वैसे ही बुद्धि संबंधित कर्मों में लीन हैं, बुद्धि वासन लोग।

यहां जो भी संबंधित वासनाएं होते हैं वह ही अगला जन्म में लेकर जाते हैं। उदाहरण के लिए ,जो पिछली जन्म में संगीतकार होते हैं। तो वह इस जन्म में बचपन से ही संगीत में रुचि रखते हैं। और बहुत अच्छे गाने गाते हैं ।

अगर इस जन्म में बचपन से ही भगवत गीता के श्लोक पढ़ाते हैं, तो समझिए कि , पिछले जन्म में भागवत गीता में पंडित था।

इसी प्रकार अगर बचपन से ही गाडी चला सकते हैं तो मतलब पिछले जन्म में गाडी चलाने में विशेषज्ञ होगा। यह सब यूट्यूब में भी देखकर आश्चर्य होते हैं। मुख्यतः इन सब के कारण है कि पिछले जन्म से आने वाले वासनाएं ही हैं।

यह सारे वासनाएं है और आशक्तियां, बहुत जन्मों से आ रहे हैं। और हमें इस जन्म में नहीं छोड़ने वाले। इसलिए जरूरत है कि हम अच्छे आदतें और आशक्तियां को अपनाना है। क्योंकि यह सब अगले जन्म में साथ आएंगे। और वह अगले जन्म में हमें बहुत उपयोग होगा। इसलिए जो भी हम हासिल करते हैं , इस जन्म में, वह कभी बेकार नहीं होगा। अगर आप अपने बच्चों पर, पति या पत्नी पर, ज्यादा ममकर रखेंगे , तो अगला जन्म में भी साथ आएगा और ज्ञान प्राप्त करने में ध्यान नहीं रख सकते हैं। अभी हम देख रहे हैं ऐसे लोग, मोक्ष पाने के लिए इच्छा नहीं दिखाते हैं। और दुख से बाहर निकलने का प्रयत्न नहीं करते हैं लेकिन जब कष्ट आता है, वह पूछते हैं कि मेरा जीवन ऐसे कैसे हुआ। मुझे क्या करना है ? ओर दुखी रहते हैं। इसलिए कम से कम इस जन्म में तो देह संबंधित और लोक वासनाओं को छोड़ सकते हैं, तब अगले जन्म में आध्यात्मिक ज्ञान को बढ़ा सकते हैं। और मोक्ष के लिए प्रयत्न कर सकते हैं । इसलिए जो भी दुख से बाहर निकलना चाहते हैं, तो यह तीनों वासनाओं से निकलना चाहिए । तभी उनका मोक्ष प्राप्त होगा। इसलिए कहते हैं, 'वासना क्षय' ही मोक्ष है।

हर किसी को जन्म लेना अवश्य है, देह अवश्य होगा और ज्ञान पाने का प्रयत्न भी अवश्य होता है । लेकिन इसके लिए सिर्फ यह वासनाएं ही अवरोध बनते हैं। यह वासनाएं नहीं दिखते हैं। लेकिन साथ में आते हैं । जैसे हींग का डब्बा में इनको निकालने के बाद भी वासन रहता है। इसी प्रकार इस जन्म में संसार और धन कमाने छोड़ दिया है, लेकिन अगले जन्म में इनके ऊपर इष्ट और आशक्ति नहीं जाएगी । और रहता ही होगा , और किसी को कहने पर भी नहीं सुनेगा। जितना भी कहो आप देह नहीं, मन नहीं , बुद्धि नहीं, आप आत्मा है , तब भी नहीं सुनेंगे। क्योंकि मुख्य कारण है अपना वासनाएं। इसलिए कम से कम अब ऐसी बुरी वासनाओं को छोड़ना चाहिए।

इसलिए पत्रीजी चार काम करने को बोलते हैं।

1. श्वास पर ध्यान रखकर, कठोर साधना करना
2. ज्ञानी लोगों का पुस्तक पठन करना

3. ज्ञान का संदेश सुनना

4. इस मार्ग में सेवा करना ।

इस ध्यान मार्ग में बहुत लोगों को हम बुलाते हैं।

लेकिन वह सब इच्छुक नहीं दिखाते हैं। क्योंकि पिछले जन्म में वह आशक्ती नहीं दिखाया है । इसलिए हम कहते हैं कि, पूर्व जन्म संस्कार होगा, तभी इस ज्ञान मार्ग में आ सकते हैं ।

देखिए हमारे भीमावरम क्लास में कितने जगह से आ रहे हैं। इन जगहों में हजारों लोग होंगे , लेकिन एक या दो लोग ही आते हैं। क्यों ? क्योंकि दूसरों को और विषयों पर लगाव है । ज्ञान के ऊपर नहीं ।

जो कुछ भी हो, इस जन्म में, वह जो कुछ हम कर रहे हैं, वह बेकार नहीं होना चाहिए। क्योंकि वह सब अगला जन्म में बहुत उपयोग होगा ,और लाभ होगा।

अगर पूरा साल कष्ट करेंगे, तो अगला क्लास में पहुंचेंगे । वैसे ही इस जन्म में कष्ट करेंगे तो, अगले जन्म में आध्यात्मिक प्रगति बढ़ेगा । इसीलिए हमें भूलना नहीं है कि , सब विषय साथ में आने वाले हैं । जिस जिस पर ममकर रखते हैं , वह बच्चे या पति या पत्नी, बंधु लोग, धन, यह सब कुछ नहीं आएंगे। लेकिन उन पर जो लगाव है और ममकर है, वह साथ में आएंगे।

अगले जन्म में भी इस पर लगाव होगा।

और इसलिए अपना भविष्य को अच्छी तरह से बनाना है । जो अभी है, वह शाश्वत नहीं है।

संस्कारों

अभी तक हम वासनाओं के बारे में जान चुके हैं। अब हम संस्कारों के बारे में जानते हैं। संस्कारों मतलब आदतें हैं । यह तीन तरह के होते हैं।

1. मिट्टी के डेले की तरह का संस्कारों ।

2. लकड़ी की तरह का संस्कारों।

3. पत्थर की तरह का संस्कारों ।

देखिए , जब मिट्टी का ड़ेला को, पानी में रखेंगे, तो वह तुरंत पिकल जाता है। लकड़ी, पानी के अंदर थोड़ी देर बाद धीरे से वह मुलायम होता है। जब पत्थर को पानी में रखेंगे , तब कितना भी युग रहेगा, वह नहीं पिकलेगा।

हमारे आदतें भी ऐसे ही होते हैं, हमारे बुजुर्गों ने कहा है । उनके हिसाब से, कौन से संस्कार लेकर आए हैं हम, जानते हैं।

1. मिट्टी के डेले की तरह का संस्कारों :-

मतलब कुछ भी प्रकार की आदतें होते हैं, जब बुजुर्ग लोग, या गुरु लोग, योगी लोग, या योगेश्वर हो जैसे बुद्ध, कृष्णा या पत्री जी, की जैसे लोग कहते हैं कि, आपका आदतें गलत है । उनके वजह से नुकसान होगा, और कष्ट होंगे, कहते हैं ।

तब जो लोग, मिट्टी का डेला की तरह का संस्कार, वाले हैं , जैसे पानी में रखने से तुरंत पिकल जाता है, वैसे ही वह आदतें लोग उन आदतों को तुरंत छोड़ देते हैं।

ऐसे मनुष्य भी होते हैं । जैसे मैं जब ज्ञान मार्ग में आया था , पत्रीजी हमारे ध्यान मंदिर में आए थे।

मैंने अपने ध्यान मंदिर में दीवारों पर एक तरफ स्त्रियों के लिए और दूसरी तरफ पुरुषों के लिए, लिखवाया था । मतलब स्त्रियों के लिए अलग और पुरुष के लिए अलग बैठने के लिए लिखवाया था।

पत्री जी, जब वह देखे थे , वह हंसने लगा और पूछा, एक रेलवे स्टेशन

के बाथरूम जैसे लिखवाया है। जैसे पुरुष और स्त्री के लिए आपने भी यहां लिखवाया है।

उसने बताया था कि उनको निकाल कर, एक तरफ ' अहम् ब्रम्हास्मि।' और दूसरी ओर ' तत्त्वं असि।' लिखवाने के लिए। मुझे समझ आया और तुरंत मैंने यह सब लिखवाया हूं।

इस तरह मंदिर के बाहर, पी.एस.एस.एम. का मुद्रा लगवाने को कहा था पत्री जी ने। किसी और मंदिर में ऐसे बदलाव के लिए राजी नहीं होते हैं, लेकिन मैंने उनको समझा और तुरंत लगवाया हूं।

तब मुझे समझ आया है कि मेरा संस्कार, मिट्टी की डेला के तरह का संस्कार है। मतलब जब बड़े लोग हमें कुछ सत्य, के बारे में बताते हैं , तब तुरंत अपने में बदलाव लाना। इसी संस्कार को ,मिट्टी की डेला के तरह का संस्कार, कहते हैं ।

इसी तरह पत्री जी का 18 आदर्श सूत्रों में एक है, विग्रह आराधना मना है और सिर्फ सत्य का आराधना करना है । लेकिन मैं बड़ा भक्त हूं, वेंकटेश्वर स्वामी जी का, अलग से मंदिर ही बनवाया हूं ।

पहले पहले में, मैंने जब पत्री जी का तीन दिवसीय क्लास लगवाया था, तब पहला दिन शनिवार था। पत्री जी सब लोग को ध्यान में बिठाया था। लेकिन हम, अपनी आदत से, उस दिन पूजा करवाने गए थे। और उसके बाद अपने कमरे के अंदर आए थे।

जब उसने हमें आने देखा था, वही स्टेज से निकलकर बाहर हमारे कमरे में आए थे। थोड़ा क्रोधित होकर हमें पूछा है, कहां गए थे?

तब हमने कहा था कि , जैसे हमारी आदत है, शनिवार को पूजा करने के लिए गए थे। तब उसने पूछा हमसे, पूजा क्यों करते थे? यह पूछने के कारण इसलिए, क्योंकि बाहर ध्यान क्लास में सब लोग बैठे थे, और हम जाकर पूजा करवा रहे थे मंदिर में।

तब हमें समझ में नहीं आया था क्या कहना हैं, और हमने कहा है कि, क्योंकि हम पूजा किए थे , तभी आप जैसे बड़ा गुरु हमें प्राप्त हुआ है। तब

वह हंस कर बोला कि , क्योंकि आप पूजा करते रहे , इसलिए मेरे जैसे बड़े लोगों को मिलने में देर हुआ है। मैंने अपने लाभ के बारे में बोले थे , लेकिन उसने हमें कितना नष्ट हुआ उससे, बोला था।

इस घटना के बाद मैं , भागवत गीता, उपनिषदों, पुराणों को पड़ा था। पत्री जी का वीडियो भी देखा था । तब मुझे समझ में आया कि पत्री जी सत्य ही बोल रहे थे ।

जब मैं दयानंद सरस्वती का किताब, 'सत्यार्थ प्रकाश' पड़ा था, उसमें पूजा बढ़ोत्तरी की ओर नहीं, लेकिन पिछड़ापन है। और जो पत्रीजी के मैसेज भी एक ही है । मुझे समझ तब आया कि, पूजा से बढ़ोतरी नहीं लेकिन पिछडा?पन में जाएंगे।

तब मैं थोड़ा सा पढ़ाई की क्योंकि पत्री जी ने पूजा मना कर रहे थे , क्यों कि उसमें क्या नष्ट है। सिर्फ ध्यान न ही क्यों करना है ? उसमें लाभ क्या है? इन सब के ऊपर थोड़ा पढ़ाई किया था।

एक समय जब मंदिर में बैठा था और अन्नमाचार्य जी का एक कीर्तन सुन रहा था। ब्र्स्मां एक है, पर ब्र्स्मं भी एक ही है । उस कीर्तन में शब्दों है , हीन और अधिक कोई नहीं, सबके लिए श्री हरि अंतरात्मा है । तब उसका अर्थ भी मुझे समझ आया था ।

इसका मतलब सबके अंदर श्री हरि है। इसलिए कोई कम या कोई अधिक नहीं है।

श्री हरि, मतलब, वेंकटेश्वर स्वामी है ना । वह सब के अंदर ,आत्मा के रूप में है ।

तब मुझे समझ में आया है कि, अभी तक वेंकटेश्वर स्वामी तिरुपति में है ही है, लेकिन अब मुझ में भी है।

इसलिए, पत्री जी कहते हैं कि, तभी विग्रह आराधना नहीं करने को और सत्य आराधना करने को। क्योंकि आत्मा ही सच है और आत्मा ही भगवान है।

तब तक तो मैं पूजा को छोड़ने के लिए डर रहा था । क्योंकि 50 सालों का आदत है । उसको छोड़ना मुश्किल है । किसी को भी एक आदत से छूटने के लिए बहुत मुश्किल होता है।

बहुत जन्मों से आने वाले यह आदत, कैसे छूटेगी ? लेकिन ब्रह्मर्षी पत्रीजी कहने पर, उस संस्कार को छोड़ दिया ।

तब मुझे समझ आया है कि तिरुमला में विग्रह है और मुझ में ही असली सत्य वेंकटेश्वर स्वामी है।

मैं तिरुपति को साल में एक या दो बार जाता था। वहां पर एक मिनट भी देखने नहीं देते थे ।

लेकिन अब जब ध्यान करता हूं, सत्य, आत्मा के साथ मतलब, उस वेंकटेश्वर स्वामी के साथ घंटे तक बैठता हूं।

तब मुझे अनंत आनंद मिलता था। शक्ति भी बढ़ती थी और मुझ में बहुत सारे बदलाव आए थे।

इसलिए पत्री जी को कहने के बाद, मैंने उस आदत को तुरंत बदला । अब मुझे समझ में आया है कि मेरे में मिट्टी की डेले के तरह का संस्कार है । पहले मै डरता था, लेकिन अब नहीं ।

इसी तरह हमारे शिष्य रवि, बहुत मांसाहार खाते थे। मेरे परिचय के बाद , उनसे कहा था कि मांस नहीं खाना है। वह रजोगुण को बढ़ावा देता है और हमसे गलत काम करवाता है। यह भी कहा कि एक जीव को हत्या नहीं करना है। क्योंकि वह पाप है, और उसका नतीजा हमें भोगना पड़ेगा, और उसने समझा।

उनको कुछ बीमारी थे और समझ में आया है कि वह मांसाहार खाने के वजह से है। इसलिए वह तुरंत बदलाव लाया, अपना जीवन में ।

इसी तरह बहुत बदलाव आए हैं। अपने बीवी के व्यवहार में, या ऑफिस में अपने बड़े अधिकारियों के साथ प्रवर्तन, और बहुत सारे विषयों में बदलाव लाया है।

इसलिए रवि का भी मिट्टी का डेला के तरह का संस्कार कह सकता हूं। वैसे लोग बहुत अच्छा आगे बढ़ सकते हैं।

जब बड़े लोग कहते हैं उसको समझ कर अपने में बदलाव लाते हैं। जैसे पानी में मिट्टी का ड़ेला पिकल जाता है वैसे ही उनकी आदतों में भी बदलाव आते हैं।

बहुत लोग इन विषयों को कहने पर बदले हैं, इन विग्रह आराधना में, और मांसाहार के विषय में बदले हैं। क्योंकि उनके संस्कार मिट्टी के डेले वाली जैसे हैं ।

2. लकड़ी की तरह का संस्कारों :-

बहुत लोग विग्रह आराधना नहीं छोड़ने के ६ वजह है। उनमें पहला है - संस्कार है । मतलब बचपन से उनकी आदतें हैं । इसलिए जल्दी बदलते नहीं, लेकिन ,सही, मानते हैं।

एक औरत विग्रह आराधना के बारे में पूछी थी। मैंने कहा कि, पहले यह जानना , भगवान कौन है ? वह कहां रहता है ? और उनको कैसे आश्रय करना ? तब अपना जो करना है करो ।

जब उनसे पूछता हूं वह कहती है, आत्मा ही भगवान है । यह भी कहती है कि, वह हम सब के देह में रहते हैं । लेकिन वह मंदिर को जाती है। मतलब सब कुछ जानने पर भी, उनकी आदत नहीं छोड़ पा रही है ।

मतलब उनका, लकड़ी की तरह संस्कार है, क्योंकि वह धीरे से बदलेगी। उनको और ज्यादा क्लासों की जरूरत है। जिसको मिट्टी का डेला का तरह का संस्कार है, वह हमारे क्लास में सुनते ही ,अपने में बदलाव लाते हैं । लेकिन यह लकड़ी संस्कार वाले, कुछ महीनो के लिए ज़ूम क्लास और भीमावरम क्लास आना पढ़ेंगे, तब बदलाव आएगा ।

जो ज़ूम क्लास और भीमावरम क्लास में आते हैं , धीरे से बदलाव लाते हैं । उन लोगों का 'लकड़ी का संस्कार' है । जो तुरंत बदलाव लाते हैं वह 'मिट्टी का डेला' वाला संस्कार है।

किसी को भी ध्यान करने से बुद्धि विकसित होता है । वह सब समझते हैं और सत्य में जीते हैं। उनको सब ऑटोमेटिक आचरण में आ जाते हैं ।

इसलिए यह संस्कारों उतना जल्दी नहीं जाते हैं। अगर संस्कार अच्छे हैं, कोई बात नहीं है। अगर तुम्हें नष्ट करते हैं, दुख निवारण को दिक्कत है, ऐसी आदतों को जरूर बदलना चाहिए। उसके लिए बुद्धि को बहुत विकसित होना है और उसके लिए कठोर ध्यान साधना करना चाहिए।

हम अभी इस पर बात कर रहे हैं कि, जब मनुष्य मरता है, उसके साथ में जो भी विषय आते हैं । क्योंकि जब तक मनुष्य भूमि पर जिंदा रहता है, वह बहुत कुछ कमाता है। धन, संपत्ति, जमीन, बड़ा उद्योग, सोने जैसे बहुत कुछ।

और साथ में, बीवी या पति, बच्चे, पोते और आगे पोते, दोस्तों, बंधुओं को भी पाते हैं।

लेकिन जब मरता है, उसमें से किसी को भी साथ नहीं लेकर जाता है। सब यही छोड़ना पड़ता है। लेकिन जब तक यहां है, वह अपना ही समझता है। तभी जीवन भर इन्हीं विषयों के पीछे भागता है। यह सब नहीं आता है तो क्या आता है साथ में। वह चार विषय हमने पहले बताएं।

अगर समझदार है तो, वह अपना समय उस पर नहीं लगाता, जो चीज साथ में नहीं आ रहा है। वह इस पर लगाता है, जो साथ में आ रहे हैं। हमें उनसे सीखना चाहिए जैसे योगी लोग जैसे रमन महर्षी और विवेकानंद स्वामी। अगर हम उनको समझ जाएंगे तो हमें मालूम होगा कि वह उन विषयों पर ध्यान नहीं देते जो साथ में नहीं आने वाले हैं ।

उनका सारा दृष्टि सिर्फ उन पर है 'जो साथ में आने वाले' विषय हैं। जो भी उन्हें लाभ देता है? और जो नष्ट करता है? वह किस्मत वाला है जिनको मालूम है किस पर ध्यान देना है?

यह सब जानकर वह अपना समझ, समय, इस पर लगाते हैं जो उनका लाभ देता है। वैसे ही लोग बहुत किस्मत वाले हैं । यह नहीं है कि बिना सोच समझकर जीते हैं, अगर न समझकर, किसी भी तरह जी लेते है, न केवल इस जन्म मे वह अपने आप को बहुत नष्ट करते हैं और बाद में बहुत कठिनाइयों

में और मुश्किलों में पढ़ते हैं।

इसलिए साथ में आने वाले विषयों के बारे में जानना चाहिए। बहुत लोग समझते हैं कि उसमें कुछ नहीं है । लेकिन सारे जीवन उसी में है। क्योंकि मरने के बाद भी जीवन है। पत्री जी बहुत स्पष्ट कहा है कि, मरने का मतलब, अपने जगह और शरीर को बदलना। यह नहीं है कि कुछ नहीं रहेगा। सिर्फ शरीर मरता है। और जो रहता है वह आत्मा है। आत्मा का मतलब हम ही है। जब आत्मा देह में प्रवेश करता है, उसी को जन्म कहते हैं। और वह जब निकलता है उसी का मौत कहते हैं।

इसलिए, इस आत्मा का जन्म हुआ, तब देह लेता है। वह इस जीवन में बहुत कुछ कमाता है, पाता है, करता हैं और फिर इस शरीर को छोड़ देता है।

अगर हम देखेंगे तो हम खाली हाथों से आते हैं और जाते भी खाली हाथों से। हम कुछ भी अपने हाथों से नहीं लेकर जाते हैं। क्योंकि हमें देह ही नहीं होता है।

लेकिन हम अदृश्य चीजों को लेकर जाते हैं। सब मानव लोग सिर्फ दृश्य पर ही अपना ध्यान देते हैं , और उन्हीं को अपना मानते हैं, और शाश्वत भी मानते हैं, और उन पर अहंकार होते हैं। लेकिन उनको यह समझ नहीं आता है कि, वह सब साथ में नहीं आने वाले हैं।

और बहुत दुखित रहते हैं अगर उनमें से कुछ भी चीज खो जाते हैं । वह समझ नहीं पाते हैं कि जो भी दिख रहा है, वह कुछ भी साथ में नहीं आएगा। वह समझते हैं कि वह बहुत कुछ खोया है और नष्ट हो गया है, और बहुत दुखित रहते हैं। कुछ लोग दूसरों को देखकर असूय होते हैं, जब उनके पास कुछ सामान दिखता है जो अपने पास नहीं है, और अपने आपको बदनसीब समझते हैं।

असलियत में अगर उनको यह समझ में आता है कि वह सब साथ में नहीं आएंगे, ऐसे लोगों पर दया करते हैं, जिसके पास सब चीज है । वह सोचते हैं, कि, वह पागल होगा, जो साथ नहीं आने वाले सामान को देखकर बहुत

खुश हो रहा है। अगर यह समझेंगे , दूसरों पर असूय नहीं होते हैं, सिर्फ दया होता है। वह दुख नहीं होते हैं कि अपने पास नहीं है, और समझेंगे कि यह सब मेरे लिए कुछ नहीं है जो साथ में नहीं आते हैं । ऐसे समझेंगे जिसके पास ज्ञान है। अगर किसी के पास थोड़ा सा भी ज्ञान है, वह समझ पाएंगे ।

ज्ञान का मतलब, 'मैं इस देह नहीं हूं, मैं आत्मा हूं', यह जानना ही ज्ञान है।

जो भी यह समझ सकते हैं, और यह जानते हैं, और इस ज्ञान जिसको पास है , वह जब मरते हैं जो पीछे रहने वाले चीजों पर प्रामुखता नहीं देते हैं । सिर्फ उन्ही विषयों पर ध्यान देते हैं, जो अपने साथ आने वाले विषय हैं ।

अगर रमण महर्षि के जीवन को देखते हैं हमें समझ में आता है। उसको भोग और भाग्य वाले विषयों पर दृष्टि नहीं रहते थे । धन संपत्ति या सोना, ऐसी चीजों पर उनका दृष्टि नहीं रहता था । सिर्फ एक लंगोटा पहनकर अपना उस समय का जो भी मिलता था, खाते थे ।

उसको देखने के लिए शिष्य गण और बहुत भक्त लोग , बहुत आते थे। एक बार एक चोर आया था और वह समझते थे कि यहां पर बहुत लोग हैं, इनको बहुत सारे बहुमान आ रहे होंगे। उनके पास बहुत सारे बहुमान होंगे, ऐसे समझ कर, एक रात यह सब लूटने के लिए धीरे से आश्रम में आए थे। और उसी हाल में आए थे जहां रमण महर्षि थे। रमण महर्षि उसको देखा था और उसने उससे कहा है कि अरे तुमने मेरे पास चोरी करने आए हैं, एक काम करो मैं यहां से चले जाता हूं , जो भी चाहते हो वह सब लेकर जाओ। निर्भय से, शर्माना नहीं। मैं बाहर चले जाता हूं , जो भी चाहते हो सब इकट्ठा करके बोरी में रखकर चले जाना। तुम जाने के बाद मैं फिर वापस आ जाऊंगा।

तब इस चोर को होश उड़ गया। अंदर जाने के बाद उनको समझ में आया है कि वहां पर कुछ नहीं है। तब उस चोर ने बाहर आकर रमण महर्षि का पैर पड़ गया था और वहां से चले गए थे।

इसे समझ सकते हैं कि, उसने भी उन चीजों पर प्रामुखता नहीं दिया, जो साथ में नहीं आने वाले विषय पर। अगर सच्ची में हम होशियार हैं, तब हम

भी उन चीजों पर, जो साथ में नहीं आते हैं, उनके बारे में सोचते नहीं होंगे।

इसलिए समझना चाहिए कि जो भी हमें दिया है प्रकृति ने, वही हमारा है और वह ही दिया है, जो हमने पिछले जन्म के अरहत से मिलना था। जो भी है, हमें संतुष्टि से जीना है ।अगर हो सकता है जितना भी कम हो, अगर लोक कल्याण के लिए दे सकते हो वही हमारे साथ में आएगा ।बल्कि जितना भी यहां इकट्ठे किए हैं वह कुछ भी नहीं आएगा। यह विषय सिर्फ ज्ञानी लोग को समझ आता है।

इसलिए समझना है कि साथ में वासनाएं, संस्कारों , कर्मों और ज्ञान जो कमाया, यह सब आएंगे।

इसलिए जानिए, वह महान नहीं है, जिसके पास धन है या, पद है, या बढ़िया सा उद्योग है। क्योंकि यह सब शाश्वत नहीं है ।कभी ना कभी रिटायर हो जाएंगे। कोई भी पद शाश्वत नहीं है। और वैसे ही पैसा कब आएगा कब जाएगा मालूम नहीं है।

हमारे सामने अनिल अंबानी का कहानी है। परिस्थितियों के कारण सब संपत्ति खो दिया है। इसलिए ज्ञानी लोग उस पर ध्यान, या प्रमुखता नहीं देते हैं,जो साथ में नहीं आता है।

हम सब आत्माएं हैं और इसलिए सिर्फ आत्मा के लाभ के लिए करना चाहिए, आत्मा के उन्नति के लिए करना चाहिए। क्योंकि यह शरीर कुछ समय के लिए रहेगा। मरने के बाद, यह आत्मा अपना स्वलोक, उस परलोक में चल जाएगा। वही शाश्वत है और वहां हमें उन्नति प्राप्त होना चाहिए।

इसलिए बड़े लोगों कहते हैं कि जब पृथ्वी पर हैं, हमें आत्मा की तरह जीना है और उनका लाभ मिलने वाले काम करना चाहिए। तभी तुम महान बनेंगे। वैसे ही लोग हैं, जैसे रमण महर्षि, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, योगी वेमाना, वीराब्र्ह्मेंद्र स्वामी, बुद्ध, जीसस, आदि ।और राम जी और हनुमान जी भी। हमारे पत्री जी, शिरडी बाबा , मेहर बाबा, सत्य साइ बाबा, जैसे लोग हमें बहुत कुछ विषयों बताए हैं। अपने स्व अनुभव के अनुसार वह बहुत कुछ विषयों पर बोध किए हैं।

जो लोग अपने आप को देह मानते हैं, उनका जीवन विधान, उनका कर्मों, और उनका प्रमुखताओं में, अलग होते हैं। लेकिन जो अपने आप को आत्मा समझते हैं, उनका जीवन विधान, प्रमुखताओं और उनके कर्मों बहुत अलग होते हैं। उनका सोच भी अलग होता है।

जो आत्मा समझते हैं और वह जो कहते हैं, और करते हैं, जो अपने आपको देह मानते हैं, उन लोगों को समझ नहीं आता है। जब आत्मा भगवान है, यह लोग विग्रह को भगवान मानते हैं। हर जीव समान कहेंगे तो यह लोग कहते हैं कि मुर्गा अलग है और अपने आप को अलग समझते हैं।

और यह भी नहीं। जब उसको मांसाहार खाने से मना करते हैं, उसको समझ नहीं आता है कि पतन हो जाएंगे।

लेकिन ज्ञानी लोग ऐसे अच्छे बातों को पालन करने को कोशिश करते हैं। जो भी इस जूंम क्लास में और भीमावरम क्लास में आते हैं, वह सब ज्ञानी के स्थाई पर हैं। इतने करोड़ों लोग में कुछ ही लोग है।

इन लोगों का संस्कार मिट्टी की डेला के तरह का संस्कार है। यह लोग बड़े लोगों को कहने पर बदल जाते हैं तुरंत । और मांस खाने भी बंद कर देते हैं।

लेकिन लकड़ी की तरह का संस्कार वाले हैं, यह बोलते हैं कि मेरा पिताजी खा रहा है, दादाजी खाते थे, हमारे परिवार लोग खाते हैं। यह भी पूछते हैं कि, अगर मांस खाना पाप है, तो सब्जी में भी प्राण होता है। और उनका खाना भी पाप है न?

उनको सारे संदेहों को एक-एक के समाधान मिलते ही, वह धीरे-धीरे बदलते हैं । इसीलिए पत्री जी कहते हैं कि ज्ञानी लोगों का सांगत्य करने को।

3.पत्थर की तरह का संस्कारों :-

कुछ लोग होते हैं, उनका पत्थर की तरह का संस्कार हैं। जितना भी समझाओ वह सुनते नहीं है। इसलिए गुरु लोग उनको ज्यादा कुछ कहते नहीं है, क्योंकि वह बेकार है। जिसे समझने की कोशिश करता है, उसी को समझाते हैं।

जैसे पत्थर को कितना साल भी पानी में रखेगा, वह नहीं पिघलता है, वैसे ही लोग यह सब। यह लोग अपने प्रारंभ जन्मों में है। इनको यह आदतें छोड़ने के लिए बहुत जन्म लेना पड़ेगा।

कम से कम लकड़ी संस्कार वाले, कुछ साल में बदलेंगे ।

इसलिए कौन से आदतें डालना है,जो हमारे साथ आने वाले हैं? कौन सा हमें लाभ देते हैं? कौन सा हमारे भविष्य बदलेंगे? कौन सा, आत्मा को उन्नति देता है? हमें जानकर, उन्ही आदतों को डालना है, वह समझदार है।

इसलिए गुरुओं की बातों को समझ कर, उन्ही को प्रमुखता देना है, जो साथ में आते हैं। अभी समझेंगे नहीं, बाद में समझेंगे। अगर हम उसको प्रमुखता देंगे, जो साथ में आते हैं, हमारा अगला जन्म बहुत महान होगा। वह बहुत किस्मत वाले होंगे। वह परलोक में भी अच्छा आधरण होगा और महान सांगत्य मिलेगा। इसलिए हम सब इसी को प्रमुखता देना चाहिए जो साथ में आते हैं ।

मनुष्य को जितना ज्यादा अवगाहन होगा, जो मरने के बाद साथ में आने वाले विषयों पर, उतना ही अच्छा भविष्य जन्म को बना सकते हो।

बहुत लोग समझते हैं कि मरने के बाद कुछ नहीं है । वह गलत है । क्योंकि ? अगर आप देह ही हो, तो यही तक खत्म हो जाता है। लेकिन सब आत्माएं ही है । इसलिए जरूर भविष्य जन्म है । वह भविष्य तीन प्रकार के होते हैं ।

1. इस जन्म का भविष्य ।
2. मरने के बाद, परलोक में होने वाले भविष्य ।
3. अगला जन्म, मतलब अगला देह में जब लेगा, वह भविष्य ।

अगर यह सारे प्रकार भविष्य अच्छा रहना है, तो हम सब को , साथ में आने वाले विषयों पर जरूर जानकारी होना चाहिए ।

इसलिए यहां रहने वाली चीजों पर नहीं बल्कि, साथ में आने वाले विषयों पर ध्यान रखना चाहिए। जितना ज्यादा समझेंगे, तो उतना ज्यादा आचरण में लेंगे।

इसलिए जानना मुख्य नहीं है लेकिन समझना मुख्य है । क्योंकि जिसको समझ आता है वहीं कुछ आचरण में रख सकता है।

ऐसे लोगों को भविष्य में अद्भुत जीवन होगा।

बहुत लोग अपने कुछ कमियों को देखकर बहुत चिंतित होते हैं। मुझे ऐसा जन्म हुआ, वैसा जन्म हुआ करके। वह भगवान को निंदा करते हैं। वह कहते हैं कि, भगवान मुझे ही क्यों इतना कष्ट दिए हैं? वैसे समस्याएं दिए हैं? वह परिवार और वैसे परिस्थितियों, मुझे क्यों दिया है? अगर आपको कुछ अवगाहन है, जो साथ में आने वाले विषयों पर, तब आपको ऐसा निंदा करने की आवश्यकता नहीं होगा । और भविष्य में बहुत सुंदर जीवन प्राप्त होगा ।

इसीलिए जो भी कमियां है और जो भी ठीक करना है इसी जीवन में करना है। अभी अगर इस जन्म में कुछ भी नहीं करेंगे तो बाद में क्या कर सकते हैं? क्या बदलाव ला सकेंगे?

जब हम इस आध्यात्मिक मार्ग में आए हैं, मतलब हम ज्ञान मार्ग में आए हैं। इसीलिए सब विषयों पर अवगाहन होना चाहिए? जो भी बुद्धि के स्थाई में है और आत्मा के स्थिति में है, वही सब समझ सकते हैं। इसलिए मरने के बाद साथ में आने वाले कर्मों के बारे में भी जानेंगे ।

कर्मों ।

कर्मों का मतलब क्या है? वह कितने प्रकार के होते हैं ?

किस तरह के कर्मों को प्रमुखता देना है ? किस तरह की कर्मों हमें करना है ? इन सब के बारे में जानते हैं ।

मुख्यतः, कर्मों - तीन प्रकार के होते हैं ।

1. वर्तमान कर्मों।

2. संचित कर्मों।

3. प्रारब्ध कर्मों ।

वर्तमान कर्मों का मतलब, जो भी कर्मों अभी हम कर रहे हैं । उन्हीं को आगामी कर्मों को कहते हैं।

सुबह उठने से लेकर सोने तक हम बहुत तरह के कर्म करते हैं। न केवल कर्मों, बातें भी करते हैं। इसलिए हमारे कर्मों और बातें भी कर्मों कहलाते हैं।

इस जन्म में 60% कर्मों को इसी जन्म में अनुभव हो जाते हैं और बाकी 40% अगले जन्म में । देह को छोड़ने के बाद अपना चित्त में जमा हो जाती है। उन्हीं को संचित कर्मों को कहते हैं ।

शास्त्रों में उसको ‘चित्रगुप्त का चिट्ठा’ कहते हैं। हमारे पी एस एस एम में, उसको ‘आकाशिक रिकॉर्ड्स’ कहते हैं। जब नया जन्म लेते हैं, इन्हीं संचित कर्मों में से कुछ चुनकर आते हैं। और इस कर्मों को हमें प्रारब्ध कर्मों कहते हैं।

जो लाए हुए प्रारब्ध कर्मों को हमें जरूर अनुभव करना ही पड़ेगा। और अनुभव करेंगे भी। किसी को भी छूट नहीं है। इस प्रकार के तीन कर्मों होते हैं। उन्ही कर्मों के आधारित आपका भविष्य होता है। इन कर्मों के बारे में जितना ज्यादा अवगाहन होगा, भविष्य में उतना ज्यादा लाभ मिलेगा।

और इन कर्मों को तीन प्रकार के करने वाले होते हैं।

1. पाप कर्मों ।

2. पुण्य कर्मों ।

3. मुक्ति कर्मों या आत्म कर्मों, कहते हैं ।

अगर हम देखेंगे कुछ लोग पाप कर्मों करते हैं। और कुछ लोग पुण्य कर्म करते हैं। बहुत कम लोग मुक्ति कर्मों या आत्म कर्मों करते हैं ।

एक प्रकार हम कह सकते हैं, जो अभी जूम क्लास में और भीमावरम क्लास में आ रहे हैं, यह लोगों को इस कर्मों के बारे में और कर्म सिद्धांत के बारे में अवगाहन हो चुका है। वैसे लोग पाप और पुण्य कर्मों से ज्यादा आत्म कर्मों को प्रमुखता देते हैं।

क्योंकि जो इस ज्ञान मार्ग में आ चुके हैं उनको समझ आया है कि, 'पाप कर्मों से दुख मिलता है' ।

'पुण्य कर्मों से सुख या भोग मिलता है' ।

लेकिन 'मुक्ति कर्मों से ही मोक्ष मिलेगा' ।

इस अवगाहन सिर्फ जो ज्ञान मार्ग में आ चुके हैं, उसी को होता है। अभी जो नया आया है, उनको सही तरह से आवाहन नहीं होता है।

देखेंगे तो पुण्य कर्मों से ज्यादा नष्ट नहीं है। लेकिन जो पाप कर्मों करते हैं उसे बहुत कष्ट होते हैं, और नरक को अनुभव करना पड़ता है। अगर इन पाप कर्मों को पार करना है, तो मुक्ति कर्मों करना है। मतलब ज्ञान प्राप्ति करना चाहिए। इसके लिए पत्री जी का बोध किया 'श्वास पर ध्यान' का, कठोर साधना करना चाहिए । और कोई दूसरा करने से, ज्ञान नहीं मिलने वाला है ।

भागवत गीता में कहाँ हैं न । 'ज्ञानाग्नि दग्ध कर्माणि' । मतलब सिर्फ ज्ञान पाने से ही आपका किया हुआ कर्मों नाश हो जाएंगे ।

लेकिन कर्मों को दग्ध या नाश क्यों करना चाहिए। मतलब जब सारे कर्मों नाश हो जाते हैं, मनुष्य, जिस मोक्ष के तलाश में है , वह मिलेगा । उसी को हम दुख रहित स्थिति कहते हैं। उसी को शाश्वत आनंद स्थिति भी कहते हैं।

इसलिए ऐसे ज्ञान सिर्फ 'श्वास पर ध्यान' करने से ही मिल सकता है।

यह पाप और पुण्य कर्मों दोनों देह संबंधित है। लेकिन मुक्ति कर्मों, आत्म संबंधित है । इसलिए इनके बारे में और गहराई में जानते हैं ।

हमने पहले कह चुके हैं कि, कर्मों का तीन प्रकार के करते हैं । कुछ लोग 'पाप कर्म' करते हैं और कुछ लोग 'पुण्य कर्म' करते हैं । और बहुत कम लोग 'मुक्ति कर्मों' या 'आत्म कर्मों' करते हैं ।

आगे, इन कर्मों को दो प्रकार विभाजन कर सकते हैं।

1. देह कर्मों ।

2. आत्म कर्मों ।

जो भी देह को लाभदायक पहुंचने वाले करते हैं वह देह कर्मों है और जो आत्मा को लाभदायक है वह आत्म कर्मों कहते हैं ।

इसी प्रकार इन देह कर्मों में दो प्रकार होते हैं। 1.पाप कर्मों 2.पुण्य कर्मों।

इस प्रकार आत्म कर्मों में भी दो प्रकार होते हैं।

1.पाप कर्मों 2.पुण्य कर्मों ।

1.देह कर्मों में पाप कर्मों :-

जो भी कर्म से दूसरे प्राणियों का देहों को नष्ट करता है, कष्ट करता है, बाधा पहुंचता है, और हिंसा करते हैं ।

पत्री जी ने देह सम्बंधित पाप कर्मों के बारे में जोर से कहते हैं। उसने जीव हिंसा और मांसाहार को बंद करने को कहते हैं। क्योंकि देह पाप कर्मों करने वाले अपने देहों, उसी का फल भोगना पड़ता है। अभी जो लोग रोग अनुभव कर रहे हैं, वह दूसरे प्राणियों को हिंसा किए हुए लोग हैं। इसीलिए पत्री जी कहते हैं कि, किसी भी प्राणी को हिंसा नहीं करने को।

इसी प्रकार अगर किसी प्राणी को कष्ट किया है या नष्ट किया या दुख, धोखा, किया हो, उसका फल भुगतना पड़ेगा। अगर किसी का पैर काट दिया तो, एक्सीडेंट में या बीमारी की वजह से, अपना पैर खो जाएगा। उसी प्रकार जो भी हिंसा करते हैं, उसी प्रकार अनुभव करना पड़ेगा।

एक और विषय है। यह जीव मतलब, पशु, पक्षी, छोटे कीड़े, जल चर, सब सामूहिक आत्माएं हैं। लेकिन मनुष्य एकात्मा है। इसलिए उन जीवों के साथ करने वाला हिंसा से अधिक, मनुष्यों के साथ करने वाला हिंसा अधिक होता है ।

जानवरों, 'सामूहिक आत्माएं' हैं, इसलिए उनका फल भोगने मे समय लगता है। लेकिन मनुष्य के विषय में वैसे नहीं होता । क्योंकि वह एक आत्मा है। बहुत लोग स्त्रियों के ऊपर अत्याचार करते हैं । यह पति लोग, पत्नियों को बाधा पहुंचाते हैं। और कुछ लोग काम करने वालों पर भी बाधा पहुंचाते हैं । अपने नीचे काम करने वालों पर भी बाधा पहुंचाते हैं । इन कर्मो का कठोरता ज्यादा होगा ।

इसलिए न केवल जानवरों के प्रति, साथ वाले मनुष्य लोगों के विषय पर भी सावधान रहना चाहिए । नहीं तो कठोर बाधा को भुगतना पड़ेगा ।

2. देह कर्मो में पुण्य कर्मो ।

मतलब दूसरे जीव को लाभ पहुंचाने वाले और आनंद देने वाले कर्मो।

जब दूसरों का सेवा करते हैं, उसका फल भोग, मतलब सुख का अनुभव करेगा ।

सेवा मतलब दूसरों का लाभ करने वाले कर्मो, जैसे अन्न दान, वस्त्रों को दान, धन-दान, वैध्य सेवा आदि।

यह पुण्य कर्मो का फल, मनुष्य सुख भोगता है । क्योंकि दूसरों को देह को लाभ पहुंचा, अपने देह को भी सुख मिलेगा । इसलिए बड़े लोग, हमें पुण्य करने को कहते हैं । पाप कर्मो को नहीं करना है।

इसी प्रकार 'आत्म कर्मो' मतलब 'मुक्ति कर्मो' भी दो प्रकार होते हैं।

इसमें भी पाप कर्मो और पुण्य कर्म होते हैं।

पहले अगर हम जानेंगे कि देह कर्मो और आत्म कर्मो का फर्क क्या है, तब बाद में 'आत्मा का पुण्य कर्मो' और 'आत्मा का पाप कर्मो' के बारे में जानेंगे ।

'देह का पाप कर्मो' के वजह से, हमें दुख और कष्ट मिलता है । और 'देह का पुण्य कर्मो' की वजह से, हमें सुख प्राप्त होता है।

उसी प्रकार 'मुक्ति कर्मो में, पाप कर्मो' से आत्मा का पतन होगा।

और 'मुक्ति कर्मो में ,पुण्य कर्मो' से, आत्मा को मोक्ष मिलेगा ।

सारे देह संबंधित कर्मो को, देह कर्मो कहते हैं। 'आत्मा संबंधित'

कर्मों को मुक्ति कर्मों कहते हैं।

1. मुक्ति कर्मों में पाप कर्मों :-

बहुत लोग इस ज्ञान मार्ग में आकर भी, वह अपनी झूठी बातों से कई लोगों को फंसा कर पैसे कमा रहे हैं। लोगों का भोलापन को, और कमजोरी को ,इस्तेमाल कर रहे हैं । ऐसे कर्मों को 'मुक्ति कर्मों में पाप कर्मों' कहते हैं मतलब 'आत्मा का संबंधित पाप कर्म है' ।

कुछ लोग तो शारीरिक संबंधों रखकर, कष्ट देते हैं । यह भी 'आत्मा संबंधित पाप कर्म है'।

कुछ लोग पिरामिड बनाने के कारण बताकर, पैसे वसूल करते हैं । और यह पैसे अपने लिए इस्तेमाल कर रहे हैं। कुछ लोग अपने घर बना रहे हैं।

इस प्रकार इस मार्ग में बहुत तरीके से पैसे बना रहे हैं। वैसे लोग इस प्रकार जो कमा रहे हैं वह सब 'आत्मा कर्मों का पाप कर्मों' कर रहे हैं । इस वजह से भविष्य में उनके आत्मा पतन होगा । इसलिए पत्री जी ने अपने 18 आदर्श सूत्रों में कहा है कि इस ज्ञान मार्ग में पैसे का लेनदेन नहीं होना चाहिए।

याद रखिए सिर्फ 'श्वास पर ध्यान' ही आत्मा का संबंध साधना है। लेकिन बहुत लोग 'गाइडिंग' मतलब, 'बातों पर ध्यान' और दूसरे प्रकार का ध्यान बोलते रहते हैं । वह सब आत्म कर्मों नहीं है । वह सब मन संबंधित कर्मों हैं । इसलिए गाइडिंग करने वाले अपने आत्मा को लाभ नहीं पहुंचेंगे और आत्मा का उन्नति नहीं होगा ।

क्योंकि संसार में 'देह साधनाएं' और 'मनो साधनाएं' भी हैं । 'गैडिंग' - मनो साधना है।

2.मुक्ति कर्मों में पुण्य कर्मों :-

एक प्रकार कह सकते हैं कि, सिर्फ 'श्वास पर ध्यान' ही, आत्मा संबंधित कर्म है । याद रखिए, और बाकी साधनाएं, या तो मन संबंधित है या तो दह संबंधित है ।

सिर्फ 'श्वास पर ध्यान' ही 'आत्मा संबंधित पुण्य कर्म है' । इसलिए इस ध्यान मार्ग में सारे कर्म ही पुण्य कर्मों है।

पहले हम देह संबंधित पुण्य कर्मों और आत्मा पुण्य कर्मों, का अंतर जानते हैं। अगर शिरडी साइन बाबा मंदिर में अन्नदान करते हैं, वह देह संबंधित पुण्य कर्म है। अब कड्ताल, में यज्ञ कार्यक्रम में अन्नदान और भीमावरम तीन दिवसीय क्लास में अन्नदान करते हैं, आत्मा संबंधित पुण्य कर्म कह सकते हैं ।

अगर पाठशाला में पुस्तक बांटते हो, वह देह पुण्य कर्म होगा। लेकिन ध्यान संबंधित पुस्तक और ज्ञान संबंधित पुस्तक बांटते हो, वह आत्मा का पुण्य कर्म होगा ।

भीमावरम शिविर में बहुत लोग आते हैं। वह सब लिख रहे हैं, जो भी क्लास में कहते हैं। यह ज्ञान न केवल उनका, बाकी पीडियों को भी उपयोग होता है। और लाभ पहुंचेगा। अगर ऐसी किताबें बांट सकते हैं, वह भी आत्मा को पुण्य कर्मों कहते हैं। बहुत लोग जीव हिंसा करते हैं। अगर हमें ऐसे किताब बांटते हैं और ज्ञान दे सकते हैं कि, वह जीव हिंसा बंद करते हैं, तब वह आत्मा का पुण्य कर्म होता है। क्योंकि उससे जीव का आत्मा बहुत उन्नति प्राप्त करता है। जब एक दूसरा आत्मा का उन्नति में सहाय करते हैं, अपना आत्मा भी उन्नति करता है।

इसी प्रकार जब दूसरों को लाभ मिलने वाला ज्ञान बांटते हैं, वह सबसे महत्व आत्मा का पुण्य कर्म होगा ।

सब लोग आत्माएं हैं इसलिए आत्मा को लाभ पहुंचाना है। उसके लिए ‘श्वास पर ध्यान’ करना चाहिए। साथ में दूसरे आत्मा को लाभ देने वाला सेवा करना चाहिए। इसलिए, हम सब इस ज्ञान मार्ग में आए हैं, मतलब मुक्ति कर्मों में आ चुके हैं । इसलिए हम इस मुक्ति कर्मों में, मतलब, आत्मा कर्मों में जो भी कर सकते हैं, दूसरों को नष्ट नहीं करना है । मुख्य बात है कि ‘ध्यान’ के नाम पर किसी को किसी प्रकार का धोखा देना, या गलत बातों में फंसा कर गलत रास्ते में चलना, आत्मा का उन्नति को रुकावट देना, अपना स्वार्थ के लिए उपयोग करेंगे, तो आध्यात्मिक पतन होगा ।

बड़े लोग कहते हैं कि, पाप को पकना है। अगर बहुत पाप करने के बाद भी, उसको कुछ नहीं हो रहा है, मतलब उसका पाप अभी पका नहीं। ऐसे लोग बहुत सारे हैं। जो जिंदगी में झटका पाये हैं और गायब हो गए हैं । कुछ समय

के लिए चमकते हैं, बाद में गायब हो जाते हैं। यह सारे विषय हमें याद रखना चाहिए ।

इसी प्रकार देह कर्मों में और आत्मा कर्मों में दो प्रकार के होते हैं ।

1. काम्य कर्म। 2. निष्काम कर्म ।

काम्य कर्म, मतलब फल को आशा रखकर करने वाले कर्मों और निष्काम कर्म मतलब बिना कुछ आशा करने वाला कर्म है।

1.देह काम्य कर्मो :-

अगर हम कुछ इच्छा को पूरी करने के लिए पूजा करते हैं, वह काम काम्य कर्म कहते हैं। वैसे ही यज्ञ भी काम्य कर्म कहते हैं। जैसे वर्ष होने के लिए , या पुत्र का मेष्टी के लिए किया, अपना राज्य को विस्तारण के लिए। या किसी भी लाभ के लिए बड़े-बड़े राजा लोग याग करते हैं, यह सब काम्य कर्म हो जाते हैं।

2.देह का निष्काम कर्मो :-

वैसे ही जो भी कर्म दूसरों को देह लाभ देते हैं, बिना कुछ आशा करके, तब वह निष्काम कर्म कहते हैं। भागवत गीता में कहा है कि, निष्काम कर्म के लिए जरूर फल मिलेगा ।

इसी प्रकार 'आत्मा कर्मों' में भी 'काम्य कर्मों' और 'निष्काम कर्मों' भी है ।

1.आत्मा का काम्य कर्मो :-

इस ज्ञान मार्ग में आकर भी कुछ लोग अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए, संकल्प रखकर ध्यान करते हैं । यह आत्मा का काम्य कर्म कहते हैं। इसीलिए मैं कहता हूं कि कोई संकल्प रखने का जरूरी नहीं है। आप ध्यान करते रहिए, जो मिलना है वह मिल जाएगा।

कारण यही है कि, संसार या सृष्टि का निर्माता, सब जानता है। तुम्हें पूछने की कोई जरूरी नहीं है। इसलिए पत्रीजी कहते हैं कि, ध्यान सीखते समय कुछ पैसे का लेनदेन नहीं होना चाहिए। क्योंकि अगर पैसे लेंगे वह कर्म फल को आशा रखना होता है। इसलिए मैं आप सबको, करने पर ध्यान देना को कहता हूं, बल्कि इच्छाओं पर नहीं। जब जो मिलना है, आपको मिल ही

जाएगा। जल्दबाजी क्यों होना चाहिए ?

इसलिए याद रखना, इस कर्मों का फल, देह छोड़ने के बाद भी लेकर जाएंगे और दूसरे देह में भोग सकते हैं। इसलिए हमें जो साथ में आते हैं, उस विषयों पर ही ध्यान देना चाहिए। पाप कर्मों नहीं, और पुण्य कर्मों भी नहीं। मोक्ष प्राप्त के लिए सिर्फ आत्मा का निष्काम कर्मों को करना चाहिए।

2.आत्मा का निष्काम कर्मों:-

आपको लाखों या करोड़ देने की जरूरत नहीं है। बल्कि जो कुछ दे सकते हो, वही बहुत है। न केवल धन, आप अपना समय, या वाक, या शक्ति, या अपना जीवन भी दे सकते हो। यह सब आत्मा को लाभदायक सेवा है। और जरूर अपने आत्मा का उन्नति के लिए सहायता करेंगे। अगर यह सब निष्काम कर्मो हो जाते हैं, तो देह छोड़ने के बाद, ऊपर लोक में उन्नति होगी। और आगे आपको स्व-इच्छा का जन्म मिलता है ।

हम सब सुबह उठकर ध्यान कर रहे हैं, ज्ञान बढ़ाने को प्रयत्न कर रहे हैं, किताबें पढ़ रहे हैं, संदेशों को सुन रहे हैं, और निष्काम सेवा कर रहे हैं। वैसे करने से हमें उसके फल, आंखों को नहीं दिखता है। लेकिन आपका खाता में रिकॉर्ड हो जाता है। उसी को आकाशिक रिकॉर्ड कहते हैं।

इसलिए आपको नहीं मिलने का सवाल ही नहीं होता है। क्योंकि वह नहीं दिखाई देता है। हर एक कर्म के लिए फल जरूर होगा। इसलिए पत्री जी कहते हैं कि, अपना समय और संदर्भ के हिसाब से मिलेगा। इसलिए कुछ भी मांगने की जरूरत नहीं है।

इसलिए जानिए कि कुछ भी कर्म बेकार नहीं जाएगा । पाप कर्मो मत करना, दिखावट के लिए नहीं करना, नाम कमाने के लिए नहीं करना, प्रलोभन में नहीं पढ़ना, इसी आध्यात्मिक मार्ग में कमाने को मत सोचना, सारे पुण्य कर्मो निष्काम होना चाहिए।

मुख्य बात है कि 'देह के पाप कर्मों' से भी बहुत कठोर है, 'आत्म के पाप कर्मों'। यह जानना है कि अगर यह करते हैं, बहुत ही नष्ट होने का अवसर है, संभव है।

कर्म - अकर्म।

श्री कृष्ण जी का बोध ।

श्लोकः किं कर्म किमकर्मेति कवयोऽप्यत्र मोहिताः ।

तत्ते कर्म प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात ।। (भ.गी.4-16)

तात्पर्य : कर्म और अकर्म का अंतर नहीं जानकर, विध्वान लोग भी भ्रांति में पढ़ रहे हैं। इसलिए कर्म और अकर्म को जानकर, दुखमय अज्ञानता से विमुक्त होने के लिए कर्म क्या है, वह जानिए ।

श्री कृष्ण जी सत्य ही कहते हैं। सबको प्रमाणिक है, पालन करना जरूरी है।

श्री कृष्ण जी ने दुख देने वाली अज्ञानता से बाहर निकलने को कहा था। मतलब ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। अगर ज्ञान प्राप्त करेंगे तब दुख से बाहर निकलेंगे। अज्ञानता से बाहर निकलना है तो कर्म का मतलब समझना चाहिए। वह आगे कहते हैं कि कर्म और अकर्म का मतलब खुद बड़े-बड़े पंडितों को समझने में मुश्किल होता है।

मतलब खुद पंडितों को नहीं समझ में आ रहा है। इसलिए हमें कर्म के बारे में जानना चाहिए।

कौन से कर्म उत्तम है, कौन से कर्म प्रमाणिक है, कौन से अप्रमाणिक है, कौन से कर्म निशिद्ध है और कौन से कर्म सम्मति है, यह सब हमें जानना है।

क्योंकि जब तक कर्म का स्वरूप नहीं जानेंगे, तब तक भौतिक बंधन में से नहीं निकलेंगे। इस भौतिक बंधन में नहीं फसना है तो, कर्म पर अवगाहन होना जरूरी है।

इसलिए इस देह को त्यागने के बाद, अगला देह में प्रवेश नहीं करने के लिए, जन्म राहित्य के लिए, कौन से कर्म करना चाहिए वही करना है।

सहज बात है कि हम आत्मा होने के नाते, मरने के बाद, इस देह को छोड़ते हैं। और ऊपर लोकों में जाने के बाद, कुछ देर के लिए वहां रहकर, वापस यहां एक देह लेते हैं।

और अगर दूसरा देह नहीं लेने का अवसर है, तो उस को जन्म राहित्य कहते हैं। उसी को मोक्ष भी कहते हैं। इस मोक्ष पाने के लिए वैसे ही कर्म करना चाहिए, श्री कृष्ण भगवान ने कहा है । इसलिए 'कर्म' के बारे में जानना चाहिए।

श्री कृष्ण भगवान ने आगे भी कहा है कि, कर्म फल को त्याग करना, सबसे महान है। इसलिए जिस जिस को कर्म माना है? पहले इन पर अवगाहन होना चाहिए , जानना चाहिए। इस कर्मों को अगर निष्काम से, मतलब 'बिना कुछ फल का आशा रखकर', करते हैं, तब हम अपना जीवन लक्ष्य, मोक्ष पायेंगे, श्री कृष्ण भगवान कहते हैं।

इसलिए 'कर्म' क्या है, जानते हैं अभी ।

सामान्य लोग पुण्य कर्मों को महान मानते हैं । क्यों? क्योंकि बहुत बड़े पंडित और गुरु लोग कहते हैं कि पाप नहीं करना है। और पुण्य करना है। इसलिए सामान्य लोगों समझते हैं कि हमें पुण्य कर्मों ही करना चाहिए ।

लेकिन योगी लोगों के हिसाब में, पुण्य कर्मों भी, अकर्म मानते हैं । इस विषय ने श्री श्याम चरण लाहिरी ने बताया है। उसने कहा है कि सामान्य लोग पुण्य कर्मों को ही 'कर्मों' मानते हैं, और कहा है कि, योगी लोगों के हिसाब में अकर्मों है । यहां 'अकर्म' का मतलब उस कर्मों से फल नहीं मिलता है।

पंडित लोग भी मानते हैं कि पुण्य कर्म ही बहुत महान हैं। लेकिन योगी लोग के हिसाब में, यह पुण्य कर्म कुछ फल नहीं देने वाला हैं। यह बाबा श्री श्याम चरण लहरी ने कहा है। लेकिन हमें संदेह आएगा कि हर कर्म का फल होगा न? और यह कैसे होगा कि फल नहीं देता है? यहां पर हमें गहराई में जाना है।

इस जन्म में, आपने बहुत पुण्य कर्म किए हैं। इसका फल यह होगा कि अगला जन्म में सुख भोगेगा, बहुत पैसा वाला होगा, लेकिन कितने सालों तक? जब तक तेरा पुण्य खत्म ना होगा? जब वह पुण्य खत्म होगा तब उसका आगे फल नहीं होगा ?

इसलिए योगी लोग इस पुण्य कर्म को भी अकर्म मानते हैं। देखिए आपके पास पैसे हैं, वह खर्च कर दिया है। अब तो आपके पास कुछ नहीं है न ?

इसलिए योगी लोग पूछते हैं कि वैसे कर्म हमें क्यों चाहिए? योगी लोग उन कर्मों को कर्म ही नहीं मानते हैं। इसलिए पत्री जी कहते हैं कि हमें ना पाप चाहिए, ना पुण्य भी चाहिए।

इसलिए जो भी कर्म, आत्मा को लाभ देता है ! 'जिस कर्म का फल, आत्मा को मिलता है'। उसी को योगी लोग 'कर्म' मानते हैं। मतलब जो कर्म आत्मा को जानने में, आत्मा को उन्नति मिलेगा, आत्मा को लाभ मिलेगा, वैसे ही कर्म को योगी लोग कर्म मानते हैं।

ऐसे कर्मों की वजह से ही हमें मोक्ष मिलेगा और जीवन का लक्ष्य हासिल करेंगे। सिर्फ और सिर्फ ध्यान ही, 'योगी लोगों' के हिसाब में 'कर्म' मतलब, जिससे फल मिलने वाला ही, कर्म को मानते हैं। वो बाकी कर्मों को अकर्मों मानते हैं, मतलब फल नहीं मिलने वाला कर्मों मानते हैं ।

क्योंकि? पुण्य कर्मों तत्कालीन भोग देने वाला भौतिक जीवन है। लेकिन जन्म राहित्य नहीं देते हैं। मतलब वह बंधन में रखते हैं, बल्कि बंधन मुक्ति नहीं करेंगे। मैं भी पत्री जी का परिचय होने तक, पुण्य कर्मों ही किया था, और वही महान मानते थे। लेकिन पत्री जी के परिचय के बाद, मुझे समझ आया है।

देखिए अगर हम भोगी लोग को कहेंगे कि ध्यान करने के लिए, वह कहेंगे मेरा जीवन ठीक है और वह पूछेंगे हमें ध्यान क्यों करना है ? लेकिन यहां अभी पुण्य खत्म हो जाएगा, तब अगला जन्मे मे नहीं बचेगा तब दुःखमय ही

होगा न ?

अभी हम हर रोज सुबह 3:30 बजे उठकर और 4:00 से 6:30 तक ध्यान क्यों कर रहे हैं? क्यों इतना कष्ट कर रहे हैं? इसलिए कि इस बंधन से निकलने का, और जन्म राहित्य, प्राप्त करने के लिए।

श्री कृष्ण भगवान 'निष्काम कर्म' करने को कहा था । इसलिए हमें बंध विमुक्त करने वाले ध्यान, निष्काम से करेंगे, बिना फल की अपेक्षा, कोई भी जीवन में उन्नति प्राप्त करेंगे।

इसलिए 'बिना प्रतिफल अपेक्षा से किए हुए ध्यान ही असली निष्काम कर्म है' यह जानना जरूरी है । यही मानव कर्मो में सबसे महान कर्म है । यही श्री कृष्ण भगवान ने भागवत गीता द्वारा बोध किया है।

ध्यान क्या है ?

अगर देखेंगे तो सब लोग मरने तक का ही सोचते हैं, और उसी को प्रमुखता देते हैं । मरने के बाद, ‘जो साथ में आने वाले विषयों’ पर ध्यान नहीं देते हैं । लेकिन मरने के बाद ‘साथ में आने वाले विषयों’ पर ही ‘अगला जन्म’ आधारित है ।

बहुत लोग रोते हैं कि मेरा जन्म ऐसा हो गया, या वैसे हो गया । लेकिन कोई भी उसको सुधारने के लिए नहीं सोचते हैं। सोचिए, यह जन्म शाश्वत है क्या ? नहीं है न? मतलब जो अभी है, वह शाश्वत नहीं है, और जो लोग अभी है वह भी कुछ समय के लिए ही रहेंगे ।

जब आपको यह जन्म पसंद नहीं है और आपका पसंद का जन्म चाहिए तो ? आपका ‘साथ में आने वाले विषयों पर ध्यान देना चाहिए। उस विषयों पर अवगाहन होना चाहिए। उनके प्रकार सही करना चाहिए, तब आपका भविष्य जन्म वैभवशाली होगा ।

इसलिए समझदार लोग ‘साथ में आने वाले विषयों’ पर ध्यान देते हैं । इसलिए हम इन विषयों को अधिक प्रमुखता दे रहे हैं। और गहराई में विश्लेषण कर रहे हैं ।

साथ में आने वाले विषयों ।

1. वासनायें, मतलब इच्छाएं या आशक्तियां ।
2. संस्कारों, मतलब आदतें ।
3. कर्मों ।
4. ज्ञान ।

इन्हीं के बारे में हम बात कर रहे हैं ।

अब हम कर्मों के बारे में बात कर रहे हैं। इन कर्मों के बारे में सबको अवगाहन होना चाहिए। यह बहुत महत्वपूर्ण है। इस जन्म में किए हुए कर्मों पर ही आपका भविष्य आधारित है। इसलिए कर्मों कितने प्रकार के हैं ? कैसे

कर्मो करना चाहिए? कौन सा कर्म हमें लाभदायक है? सब जानना चाहिए ।

कर्मों तीन प्रकार के करने वाले होते हैं, पहले बात कर चुके हैं।

कुछ लोग जो प्रारंभ जन्मों में होते हैं, वह पाप कर्मों करते हैं । कुछ लोग मध्यम जन्मों में होते हैं और वह पुण्य कर्मों करते हैं। जो आखिरी जन्मों में होते हैं वह मुक्ति कर्मों करते हैं। इन मुक्ति कर्मों के बारे में, जो लोग ध्यान मार्ग में और ज्ञान मार्ग में होते हैं, उन्हीं को समझ आते हैं ।

श्री कृष्ण जी ने कहा है कि बिना कुछ प्रतिफल अपेक्षा रखकर, ध्यान (मतलब श्वास पर ध्यास) करेंगे, वही असली निष्काम कर्म होगा ।

इसी को ओशो ने कहा है कि 'बिना प्रतिफल अपेक्षा और निस्वार्थ मनोस्थिति ही ध्यान है'।

निस्वार्थ, मतलब बिना कुछ करना या, बिना कुछ सोचना, रहने वाले मनोस्थिति ही ध्यान है, ओशो कहते हैं।

इसीलिए जानिए की अगर प्रतिफल अपेक्षा रखते हैं, वह ध्यान नहीं होता है। सिर्फ वैसे ध्यान, जो बिना कुछ प्रतिफल अपेक्षा, करने से ही मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं।

अभी हम बिना कुछ संकल्प और इच्छाओं के बिना, वही काम कर रहे हैं। हमें मालूम है कि 'जब जो करना है करेंगे, तब जो आना है वह आएगा'। इसलिए बिना प्रतिफल अपेक्षा के साथ 'श्वास पर ध्यास' रखकर ध्यान कर रहे हैं।

सुबह हम लोग जूम में भाग ले रहे हैं, और हर महीना भीमावरम क्लास में भी, घंटे तक ध्यान कर रहे हैं। आखिर में यही हमें मोक्ष प्राप्त करने में सहायक करेगा।

इसको समझने के लिए ओशो ने एक कहानी बताई। उस कहानी को अभी जानते हैं।

एक व्यक्ति ने मोक्ष प्राप्त करने के लिए बहुत प्रयास कर रहे थे। बहुत लोगों से मिलता था। तब एक आदमी ने उन से कहा था कि, हिमालय में एक गुरु है। अगर आप उनसे मिलेंगे, आसानी से आपकी इच्छा पूरी हो जाएगी।

तुरंत उसने अपना सारा संपत्ति को बेचकर, पैसे लेकर हिमालय को चले गए। हिमालय तो छोटे जगह नहीं है न? वहां पर बहुत प्रदेश में घूमा है? सारे पैसे खर्च कर दिया। फिर भी वह गुरु नहीं दिखा।

ऐसा घूमते-फिरते, किसी ने उनसे कहा है कि , इन हिमालयाओं में एक जगह है, वहां पर एक बुजुर्ग आदमी है, और वह बहुत शक्तिशाली है, और महिमाएं कर सकते हैं ......शायद आप उन्हीं को ढूंढ रहे हो । तुरंत उस व्यक्ति का आशा से, इस आदमी ने उस जगह को गया और ढूंढना शुरू किया ।

लेकिन, उसको, वह आदमी नहीं मिला। सारे आहार, जो साथ लाए थे ,वह खत्म हो गया था। कुछ खाने को नहीं था, और पूरा शरीर शक्तिहीन हो गया और चल नहीं पाया और गिर गया जमीन पर। इस वक्त उनको थोड़ा दूर में एक छोटा सा झोपड़ी दिखाई दिया। उसको लगा था कि, जिस गुरु को ढूंढ रहा था, वह उसी में हो सकता है।

और तुरंत उसने अपने आप को खींचकर, वहां तक पहुंच गया। अंदर देखा, लेकिन कोई नहीं मिला।

उस पल में उसको निराश हुआ। और नीचे गिर गया। थोड़ी देर बाद उसको कुछ आवाज सुनाई दिया। एक बुजुर्ग व्यक्ति का आवाज सुना था। उसने पूछा, भाई साहब, आप जो ढूंढ रहे हो, वह मिल गए हैं क्या ? इस व्यक्ति 'हूँ' कहा था। ध्यान का मतलब समझा? पूछा था। इस व्यक्ति 'हूँ' कहा था।

बाद में आवाज देने वाले व्यक्ति नहीं दिखा। मगर इस क्षण में क्या हुआ? जब उस झोपड़ी में कोई नहीं दिखा, उसमें निराशा हुआ और सारे इच्छाएं गायब हो गए हैं और मन कुछ भी नहीं मांगा। उसमें कोई भाव नहीं था, और सारे आशाओं के साथ-साथ 'मोक्ष', पाने का आशा भी गायब हो गया।

उस पल उसको ज्ञानोदय हुआ। उसका मन शून्य हो गया। तुरंत उसने अपने बारे में जान लिया। उसने जो चाहा वह पा लिया। अनंत आनंद का अनुभव पाया है। ध्यान का मतलब जान लिया है।

हमें यहां पर समझ आता है कि .....उसने तब तक मोक्ष पाने के लिए बहुत कष्ट किया। लेकिन जब वह निराश हुआ, उसी आखिरी इच्छा को भी

छोड़ दिया। उसी पल को उसको ज्ञानोदय हुआ। सब कुछ जान लिया। बहुत आनंद पाया जो अब तक नहीं मिला। मतलब आत्म साक्षात्कार हुआ है।

अभी 'ओशो' का यह कहानी सुनकर हमें समझ आया है, 'असली निष्काम कर्म, वही है जो बिना प्रतिफल अपेक्षा का किया हुआ ध्यान ही है'।

श्री कृष्ण भगवान ने भी कहा है कि निष्काम कर्म का मतलब, बिना प्रतिफल अपेक्षा किया हुआ ध्यान ही है। उसी को 'कर्म योग' को कहते हैं। इसलिए, कोई भी, 'बिना प्रतिफल अपेक्षा ध्यान' करना चाहिए।

इसलिए अगर हम में कोई भी आशा या इच्छा रहेगी, तब हम उस परिपूर्ण स्थिति को नहीं पाएंगे । मतलब आत्म साक्षात्कार नहीं पाएंगे।

हममें ममकारें होते हैं, इच्छाएं होते हैं, आशाएं होते हैं। इनमें एक भी होने पर, हम उस स्थिति नहीं पहुंच पाएंगे, ना आत्म साक्षात्कार पायेंगे। इसलिए हमें यह समझना है कि धीरे-धीरे अपने साधना के सहारे उस स्थिति तक पहुंच पायेंगे। ऐसा व्यक्ति से बड़ा कोई भाग्यशाली नहीं है।

कर्म में अकर्म - अकर्म में कर्म

- श्री कृष्ण भगवान।

हम मरने के बाद 'साथ में आने वाले विषयों' पर बात कर रहे हैं ।

अब हम, कर्मों के बारे में बात कर रहे हैं। अगर अपना भविष्य जीवन अच्छा होना है, तब हमें कर्मों पर ज्यादा ध्यास रखना चाहिए।

आज हम श्री कृष्ण जी का एक और श्लोक के बारे में बात करेंगे। क्योंकि जो भी श्री कृष्ण ने कहा वह बहुत मुख्य है। बिना जानकर अगर हम कर्मों करते हैं, खुद को नष्ट होगा।

हम सोचते हैं कि हम बहुत महान काम कर रहे हैं। लेकिन जब हम महान लोगों के बातों को ना समझ कर, हमारी इच्छा अनुसार वह करेंगे, तब आशा करने वाला फल नहीं मिलेगा। हमें नष्ट होना पड़ेगा। इसीलिए श्री कृष्ण जी का श्लोक, अध्याय 4 और शोक 18 को जानते हैं।

श्लोकः कर्मण्यकर्म यः पश्येदकर्मणि च कर्म यः ।

स बुद्धिमान्मनुष्येषु स युक्तः कृत्स्नकर्मकृ ।। (भ.गी.4-18)

तात्पर्यः जो भी कर्म में अकर्म और अकर्म में कर्म को देखता है, वह सबसे बड़ा बुद्धिमान है। वही योगी बनेगा। वहीं सकल कर्मों को आचरण कर रहा है।

क्योंकि सबके लिए मन ही कारण है, कर्म करने वाला को और कर्म नहीं करने वालों को, अपना भाव के आधार ही फल मिलेगा, और उनके कर्मों के आधार पर नहीं। यही विषय श्री कृष्ण परमात्मा ने ऊपर श्लोक में बताया है। यह बात बहुत लोगों को समझ नहीं आ रहा है और वह लोग कर्म को देख रहे हैं, लेकिन उसके पीछे भाव को नहीं समझ पा रहे हैं। जो भी श्री कृष्ण परमात्मा जैसे बहुत महान योगी ने कहा , सामान्य लोगों को समझना मुश्किल है, और समझ नहीं पाते हैं।

बहुत लोग पूजा, आराधना करते हैं। क्योंकि भगवान उनके इच्छाओं को पूरी करता है। मतलब उनका भक्ति उन इच्छाओं पर है, बल्कि भगवान

पर नहीं। मतलब उनका बाहरी कर्म भगवान के ऊपर है, लेकिन भाव तो इच्छाओं पर है। यह स्पष्ट हो रहा है।

लेकिन ऊपर श्लोक के द्वारा हमें जानना है कि बाहर की कार्य से ज्यादा अपना भाव प्रधान होने से, इनका भक्ति भगवान के ऊपर ना रहने पर, भगवान का अनुग्रह नहीं पा रहे हैं। इसलिए भाव शुद्ध होना चाहिए, मतलब सिर्फ बाहरी कार्य में ही नहीं, भाव में भी अपने कर्म को निष्काम रखना है, यही कहा गया है।

एक छोटा सा उदाहरण देखते हैं। दो साधु लोग चल रहे थे.... बीच में एक नाला आया था। और जब वह उस नाला को पार करने जा रहे थे, एक लड़की जिसको तैरना नहीं आया, वहां रुक गई थी। जब इन साधु लोगों को देखी थी उसने उस नाला का उस पार पहुँचाने की मदद मांगी थी। तुरंत उन दोनों में एक साधु अपना कंधों पर उठाकर, उसको दूसरा पार तक पहुंचा दिया। बाद में दोनों साधू अपने रास्ते में चल पड़े। थोड़ी देर बाद दूसरा साधू ने पहले साधू से पूछता है कि, वह स्त्री को छूकर अपराध किया है। अगर यही विषय अगर गुरु जी को मालूम पड़ेगा, तो क्या होगा? तब पहले साधु कहता है कि हमने दो मील दूरी तक आ गए हैं, और अभी तक आपने उस औरत को भूला नहीं है? मैंने वही के वहीं छोड़ दिया था। आश्चर्यचकित होकर पूछता है। यहां पर यह हुआ कि पहले साधु जिसने औरत के मांगने पर नाला को पर करवाया था, लेकिन दूसरा साधू ने उस औरत को छुआ नहीं ,लेकिन उस औरत के बारे में सोचता रहा है।

यहां हमें समझना है कि जबकि दूसरा साधू उस औरत को छुआ नहीं, उनके मन में वही भाव रहने पर, 2 मील चलने के बाद भी, उस औरत को भूल नहीं पाया। भौतिक कर्म न करने पर भी उसने कर्म किया है। पहले साधु जबकि उस औरत को छुआ, सिर्फ उसकी मदद करने के लिए ही, बिना दूसरे भाव रखकर, वह कर्म नहीं किया है।

इसलिए श्री कृष्ण का कहना है 'कर्म में अकर्म' का मतलब, कर्म कर

कर भी अगर भाव शुद्ध है, तब पहले साधु की तरह कर्म नहीं करने वाला हो गया।

इसी प्रकार दूसरा साधू जबकि कर्म नहीं किया , वह कर्म करने वाला हो गया है। इसी को 'अकर्म में कर्म' कहते हैं। यही विषय, ऊपर श्लोक में भगवान श्री कृष्ण कहते हैं।

पत्री जी का क्रोध ।

इसी प्रकार बहुत लोग पत्री जी को देखकर वह कहते हैं भगवान और उसको इतना क्रोधित है ? कुछ लोग बाहर नहीं कहते हैं, लेकिन अंदर कहते हैं। जो भी उनके साथ नजदीक है, वह भी समझ नहीं पाते हैं ।

लेकिन पत्री जी का क्रोध, उन लोगों पर नहीं, बल्कि उनके भाषा पर, वाक्यों पर, काम पर, और उनके अज्ञानता पर होता है। हर समय उन लोगों का जीवन को सुधारने के लिए , क्रोध दिखाते हैं। बल्कि उन पर द्वेश नहीं है। या बदलापन के लिए करते नहीं है ? क्योंकि उनका कोई शत्रु नहीं है। इसलिए बाहर दिखता है कि वह कर्म कर रहे हैं लेकिन वह अकर्मी है, मतलब कर्म नहीं करने वाला है। यही विषय बहुत गुरुओं में भी देख सकते हैं।

इसी प्रकार वह मानते हैं कि जो भी उनके पास आते हैं, वह सब ज्ञान पाने के लिए आए हैं। और जो भी ज्ञान पाने आते हैं कोई भी गुरु उसका अहंकार को तोड़ने का प्रयत्न करता है। शिष्य लोगों के अहंकार का स्थिति देखकर कभी उस पर क्रोधित होता है, या परेशानी होता है, या उसकी तरफ नहीं देखता है, कभी उसे प्यार दिखाता है, या झप्पी, या किसी को थप्पड़ भी पड़ सकता है। ऐसे कई प्रकार के होते हैं।

गुरु का व्यवहार एक जैसा नहीं होता है। शिष्य के ऊपर आधारित है। शिष्य में अहंकार को निकाल कर ज्ञानी बनने को प्रयत्न करता है। यही प्रयत्न पत्री जी का भी है। इसलिए वह कर्मो करते हुए भी वह अकर्मी है। कोई भी कर्म उसे नहीं छूता है। श्री कृष्ण भगवान ने भी यही कहा है। ऐसे पत्री जी को सामान्य लोग कैसे समझेंगे?

वह क्रोधित हुए समझ कर और अगर कोई चले जाएंगे, तो किसको नष्ट

है? उसके पास जो ज्ञान है , वह कैसे मिलेगा? वह ज्ञान देने वाला कौन है? खुद को नष्ट होगा? हमारी भलाई के लिए जो कर रहा है, अगर वह उल्टा समझते हैं, तब वह क्या करेगा?

कुछ लोग ऐसे भी हैं, जब पत्रीजी दूसरों को डांटते हैं, तब यह कहते हैं कि वह क्यों डांट रहे हैं, और वह छोड़कर चले जाते हैं।

गुरु का चर्यों को किसी को समझ नहीं आता है। हर वक्त एक जैसा नहीं होता है। जो भी गुरु करते हैं हमें उसे पर ध्यास नहीं देना, सिर्फ अपने कर्मों पर और ज्ञान पाने पर ध्यास रखना चाहिए।

यही काम मैंने किया है। मुझ में जो भी कमियों थे उसको ठीक किया हूं। इसलिए यहां तक पहुंच पाया हूं।

इसीलिए हर एक को यह समझना है। श्री कृष्ण भगवान का श्लोक और पत्री जी का व्यवहार को भी।

हम सब ज्ञान मार्ग में आ चुके हैं। अवतार मेहर बाबा बहुत स्पष्ट से कहा है। मुमुक्षु को, मतलब साधना के लिए, एक गुरु का सहायता बहुत जरूरी है।

साधक अपने आप प्रयत्न कर सकते हैं, अपने घर बैठकर कर सकते हैं, पुस्तक पढ़ सकते हैं। लेकिन गुरु का सहायता बिना, मध्यस्थ स्तरों पर फंस जाएंगे । छंटवा स्तर को पार करना नामुमकिन है।

इसी के ऊपर मैंने एक पुस्तक लिखा, 'मेहर बाबा के संदेश' । उसको जरूर पढ़िए । आपको सही मार्गदर्शन मिलेगा।

क्योंकि हमें, बिना मालूम ही, इस माया लोक में गिर जाते हैं । और उस गुरु के मार्गदर्शक्ता से फिर हम सही रास्ते पर चलने का अवसर मिलता है।

इसलिए, सब को इस विषय को समझना है। तब हम उसको आचरण में ला सकेंगे, तो बहुत जन्मों की जरूरत नहीं पड़ेगा। बहुत ही कम जन्मों में हम अपना लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

ज्ञान ।

कोई भी अपना जीवन में साथ में आने वाले विषयों को ज्यादा प्रमुखता देना चाहिए , और अपने साथ सही विषयों को लेकर जाना चाहिए। अपने साथ, मतलब आत्मा को जो लाभदायक होगा वो ही लेकर जाना चाहिए। बल्कि आत्मा को नष्ट करने वाले विषयों लेकर जाएगा तो उससे अकलमंद वाला कोई नहीं होगा।

इसलिए अगर मालूम होगा कि कौन से विषयों को लेकर जाना, और अपनी कृषि से अगर वह पाएंगे ? तब उससे बड़ा किस्मत वाला कोई नहीं होगा।

विचित्र की बात यही है कि, सब लोग धन संपत्ति पर, और सांसारिक जीवन पर, अपना पूरा जीवन बिताते हैं। लेकिन उसमें एक भी चीज़ साथ में नहीं आने वाला है। उसके ऊपर वह सब पाने के लिए कई तरह के पापों और गलतियां करते हैं। क्या होगा? इस पापों का फल साथ में ले जाना पड़ता है। तब उनका भविष्य नाश हो जाता है। इसलिए साथ में लेकर जाने वाले विषयों पर अवगाहन होना चाहिए।

अब हम साथ में आने वाले विषयों का ज्ञान के बारे में बात करते हैं।

ज्ञान 'भी साथ में आता है'। यह ज्ञान किसी को भी शाश्वत होता है। ज्ञान उतना महत्वपूर्ण है। इसके अलावा जो कुछ भी हो वह सब अशाश्वत है। सिर्फ ज्ञान शाश्वत है।

पत्री जी ने अपने बारे में क्या कहते हैं? अगर वह उतना ज्ञान बांट सकता है तो? अपने पिछले जन्मों में कठोर कृषि किया है। पहले बुद्ध के पास आनंदा रहा था, उसके बाद एक जन्म में बेंजामिन फ्रैंकलिन नामक एक बहुत महान आत्म साक्षात्कार हुए मास्टर था, बाद में उड़ीसा में एक जीवन पर्याप्त ध्यान ही किया था, बाद में हैदराबाद में 'हजरत इनायत खान' नामक सूफी मास्टर था, बाद में इस जन्म में पत्री जी की नामक जन्म लिया है।

उसके पास बहुत बड़ा ज्ञान का भंडार है। और सब इस जन्म में बाहर आया है। इसीलिए कुछ ही कम समय में इतने सारे लाखों लोग उसके शिष्य बन गए हैं।

क्योंकि सबको चाहिए ज्ञान। जो भी ज्ञान कांक्षा से है, वह सब पत्री जी से आकर्षित हुआ। हम सब भी उसी प्रकार आकर्षित हुए हैं। उनको यह सब ज्ञान और टैलेंट कहां से आया है? मुझे समझ में आया है कि अपने पिछले जन्मों का ही है।

मैं भी ध्यान करने के बाद बहुत पुस्तक लिखा था । बहुत सारे क्लासों बता रहा हूं, बहुत जगह पर जा रहा हूं। मुझे भी समझ आया है कि मेरे पिछले जन्मों का किया हुआ कृषि से ही मैं यह सब कर रहा हूं। यह सब मैं क्यों बता रहा हूं ? यह समझने के लिए कि अपने-अपने पिछले जन्मों में पाया हुआ ज्ञान इस जन्म को भी आएगा।

न सिर्फ मुझे ही, आपका भी पाया हुआ ज्ञान साथ में आएगा। इसलिए मैं कहता हूं कि आप सब लोग किस्मत वाले हैं।

क्योंकि आप सब लोग भी ज्ञान कांक्षा से ही मेरे पास आए हैं। बहुत श्रद्धा से हर दिन बहुत लोगों इसमें शामिल है। अगर आप में आशक्ति नहीं है तो आप नहीं आएंगे न? न केवल सुबह का जूम क्लास, भीमावरम क्लास में भी आ रहे हैं। आपका अभी जो कृषि और काम, कष्ट और प्रयत्नों का बेकार नहीं होगा। जरूर आपका भविष्य में वह सब कुछ लाभ ही देगा। आपको जल्द ही अपने जीवन लक्ष्य की ओर ले जाएगा।

इसलिए अपने परिस्थितियों को देखकर, मतलब घर का, या आरोग्य, या आर्थिक, या सामाजिक, आपको चिंतित होने का जरूरत नहीं है। इसी मार्ग में आ गया है, आपको बहुत गर्व होना चाहिए। देखिए दुनिया में करोड़ों लोग हैं। उसमें से इस ज्ञान मार्ग में कितने लोग आए हैं? आखिर में इस ध्यान न मार्ग में आकर भी इस ज्ञान को प्राप्त करने का प्रयास नहीं कर रहे हैं। उनको ज्ञान पर आशक्ति नहीं है। वह सब लोग अपना शारीरिक और प्रपंचिक लाभ

ही देख रहे हैं, उसी के लिए ध्यान कर रहे हैं। इसलिए इस ज्ञान मार्ग में आने वाले आप लोग बहुत ही महान हैं।

इसलिए आपके अंदर कुछ-कुछ वासनाओं, और संस्कारों को बदलाव के लिए मैं प्रयत्न करता हूं। कभी-कभी ऊंची आवाज में बोलना पड़ता है। लेकिन मुझे पता है कि आप सब लोग बहुत उच्च स्थिति में है। मैंने पत्री जी के विषय में भी देखा था। उसने मुझे कभी भी शाबाश नहीं बोला था, जितना भी बड़ा काम करने पर भी। कभी-कभी बीच में मैं सोचता था कि यह क्या है? लेकिन बाद में मुझे समझ आया था कि, अगर वह शाबाशी करेंगे तो मुझ में अहंकार बढ़ेगा। लेकिन उनके व्यवहार को देखते ही मुझे समझ आया था कि वो मुझे पसंद करते थे। इसलिए मैं शाबाशी का आश्वासन नहीं करता था।

इसलिए याद रखिए। अभी जिस ज्ञान के बारे में हम बात कर रहे हैं वह भी साथ में आने वाली है। इस ज्ञान से हमें अच्छा ही होगा, लाभ और मोक्ष भी पा सकेंगे। इसलिए जो भी ज्ञान थोड़ा प्राप्त किए हैं, और प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए और बढ़ाना चाहिए।

इसके लिए वशिष्ठ महर्षि का आध्यात्मिक त्रिरत्न को जानते हैं।

1. साधना
2. स्वाध्याय
3. सांगत्य

इन तीनों को त्रिकरण शुद्ध से पालन करना.... और इसके लिए जितना हो सकता है कृषि करना चाहिए।

इसलिए , असली में ज्ञान का मतलब क्या है? ज्ञानी लोगों का व्यवहार कैसे होता है? अज्ञानी लोगों का व्यवहार कैसे होगा? इन विषयों के बारे में जानते हैं । तब हम किस स्थिति में हैं? उसमें से कितने को पालन कर रहे हैं? और आगे क्या पालन करना है? यह सब हमें समझ आएगा । तब हम उसको प्राप्त कर कर पालन कर सकेंगे। किसी को हमें बताने की जरूरत नहीं है। अगर ज्ञान बड़ा है कि नहीं? अपने ही व्यवहार से खुद को पता लगता है।

इसलिए जब हम उन्हें जानेंगे, हमें किस में कमी है पता होगा। किसको पालन कर रहे है? और किसको हमें ठीक करना है? यह सब हमें अच्छी तरह समझ आएगा। क्योंकि ज्ञान पाने वाले के व्यवहार में बहुत बदलाव आएगा, उसका सोच भी अलग होगा, बात करने का तरीका भी , और अपने कर्मों में भी और इच्छाओं में भी, फर्क दिखेगा ।

पहले हम ज्ञान क्या होता है, उसे जानते हैं। ज्ञान का मतलब, जो है, उसको जानना। और उसको पालन करना , 'विज्ञान' होता है। सृष्टि में एक ही रहता है, 'आत्मा'। और बाकी नहीं रहने वाले हैं। इसलिए रहने वाले आत्मा के संबंधित ज्ञान को प्राप्त करना चाहिए। इस ज्ञान से ही हम दुख से बाहर निकलेंगे।

अगर देखेंगे तो दुनिया में बहुत लोग दुखी हैं। कुछ लोग आनंद में जीते हैं, कुछ लोग दूसरों की सेवा में हैं, और कुछ लोग दूसरों को हानि करते हैं और नष्ट करते हैं। वैसे ही कुछ लोग पाप कर्मों करते हैं, और कुछ लोग अच्छे कर्मो करते हैं।

और कुछ लोग बिना भगवान को जानकर, पूजा करते हैं और आराधना करते हैं। बहुत ही कम लोग भगवान का आत्म तत्व को जानकर ध्यान करते हैं। मानवों का व्यवहार ऐसे क्यों होता है ?

क्योंकि, मानव को भगवान के बारे में और भगवान का सृष्टि पर ज्ञान नहीं है। ऐसे लोगों को अज्ञानी कहते हैं। जिनको है वह ज्ञानी कहलाते हैं। इसलिए अगर हम देखेंगे तो ज्ञानी लोगों को व्यवहार और अज्ञानी लोगों का व्यवहार अलग होता है।

एक प्रकार कहना है तो? अगर किसी को कष्ट है मतलब वो सृष्टि के खिलाफ, और सृष्टि धर्मों के खिलाफ जी रहा है। और उनका अज्ञानता ही कारण है। इसलिए अगर इस दुख से बाहर निकलना है तो आपको अज्ञानता से बाहर आना है, ज्ञान प्राप्त करना है, और आध्यात्मिक त्रिरत्न को पालन करना है ।

तब किसी को भी धीरे से ज्ञान बढ़ेगा। इसलिए ज्ञान बढ़ाने पर कैसे बदलाव आते हैं, अब जानते हैं ।

1. सहज बात है कि, एक ज्ञानी, प्रापंचिक विषयों पर विरक्त होकर रहता है। मतलब संसार, धन, बच्चे पर, ज्ञानी को आशक्ति नहीं होता है।

लेकिन अज्ञानी प्रापंचिक विषयों पर आशक्ति दिखाता है। आत्मा के विषयों पर विरक्ति दिखाता है। आत्मा के बारे में या ज्ञान के बारे में बात करने पर भी, मन नहीं रखता है।

यहां पर जानना है कि, ज्ञानी और अज्ञानी लोग अलग-अलग स्तर पर होते हैं। जितना ज्यादा प्रापंचिक विषयों पर अनाशक्ति रखते हो, मतलब उतना ज्ञान प्राप्त किया है। यह बात किसी से पूछने की जरूरत नहीं है।

बड़े लोगों को कहावत है 'विषय विरक्ति और आत्म आशक्ति' होना चाहिए।

इसलिए यह कितना प्रतिशत है, अपने अंदर देखिए। और उसको बढ़ाने को कोशिश कीजिए।

यहां पर विरक्ति का मतलब, छोड़ना नहीं, लेकिन ममता नहीं रखना है। पत्री जी ने किसी को संसार को छोड़ने को नहीं कहा, या कमाई छोड़ने को नहीं कहा, न हीं अपने सुखों को त्याग करने को बोला था। सब कुछ अनुभव करते ही, जो करना है उसको करना है।

'संसार में ही निर्वाण' का अचार्य नागार्जुन का कहावत ही, हमें पत्री जी ने बताया।

2. ज्ञानी दुख में भी आनंद में रहता है। लेकिन अज्ञानी आनंद में भी दुखी रहता है।

जानिए की, ज्ञानी लोग दुख में भी रोते नहीं। अपना जीवन ऐसे क्यों हुआ, सोचते दुखी नहीं रहेगा। हर वक्त आनंद में ही रहता है। लेकिन किसी को कुछ हो गया तो, वह उसकी सेवा करता है, और थोड़ा उपशमान देता है।

इसलिए अगर रो रहे हैं, मतलब आप अज्ञानी है ? ऐसे लोग अपने

करीब लोगों को भी सहायता नहीं देता है ।

3. ज्ञानी, अपनी इच्छाओं को सीमित रखता है। लेकिन अज्ञानी अपनी इच्छाओं को बंदी होता है।

ज्ञानी अपने इच्छाओं को सीमित क्यों रख सकता है? क्योंकि वह 'श्वास पर ध्यास' रखकर कठोर ध्यान करता है और अपना मन को सीमित रखता है। और इससे इच्छाओं को भी सीमित हो जाते हैं।

अज्ञानी ध्यान नहीं करता और मन भी नियंत्रण में नहीं होता है। इसलिए न केवल उनका इच्छाओं सीमा में नहीं रहेगा, ना उनका अरिशढ वर्गो भी, अपने हाथ में नहीं रहेगा।

4. ज्ञानी को आशा नहीं होता, लेकिन अज्ञानी सब पर आशा जताता है।

ज्ञानी ना किसी को देखकर, किसी चीज को देखकर, यह देखकर, वह देखकर, आशा नहीं जताता है। लेकिन अज्ञानी जिस चीज को भी देखा वह चाहता है। वह कभी संतुष्टि नहीं होता है ।

कुछ दिन पहले यूट्यूब में देखा था कि, सिनी हीरो, प्रभास, को 10 गाड़ी है, 9 करोड़ वाला, 8 करोड़ वाला, आदि । लेकिन सब में थोड़ी घूमेगा?

मुकेश अंबानी को मुंबई में बड़ा सा महल है। इसमें 24 ताले वाला महल में सिर्फ 6 मंजिल में पुराने गाडियां ही रखते हैं। समझिए कितने गाड़ी होंगे।

मैं यह सब क्यों बता रहा हूं ? कोई भी अपने पास जो है, उससे संतुष्ट होकर उसी के हिसाब से जीना चाहिए। दूसरों से कभी तुलना नहीं करना चाहिए। क्योंकि? आपको लाभ देने वाला ज्ञान ही है, और साथ में आने वाला भी ज्ञान ही है। उसी को बढ़ाने को प्रयत्न करना चाहिए। हमें क्या करना है जो हमारे पास नहीं है? दिखावटों की क्या जरूरत है? हमें क्या लेना देना दूसरों के कर्मों से?

5. एक ज्ञानी ज्ञान को बढ़ाता है । और इस ज्ञान उनको रक्षा करती है। लेकिन अज्ञानी अपना धन को बढ़ाता है। और उस धन को खुद को रक्षा करना है। कोई दूसरा नहीं करेगा।

6. एक ज्ञानी संतुष्टि में जीता है। और अज्ञानी असंतुष्टि रहता है, जितना भी हो।

7. ज्ञानी जो है वही बांटता है। अज्ञानी बांटता नहीं पाता।

ज्ञानी, अगर उनके पास 100 रूपये हैं वह 10 रूपये देता है। और लाख है तो हजार या 10000 रूपये कुछ देता है। लेकिन अगर आप दे नहीं पा रहे हो मतलब आप अज्ञानी है।

8. एक ज्ञानी बिना दे नहीं रह सकता, मगर अज्ञानी दे नहीं पाता।

9. आत्मज्ञानी सब कुछ एक ही समझता है। लेकिन अज्ञानी सब अलग अलग समझता है।

10.आत्मज्ञानी सबको प्रेम करता है। और सबको समान मानता है।

लेकिन अज्ञानी सबको द्वेश करता है। अपने लोगों को अलग और दूसरों को अलग देखता है। एक प्रकार से राग और द्वेष दिखाता है।

11. ज्ञानी दूसरों के बारे में सोचता है। पत्री जी दूसरों के बारे में ज्यादा सोचा था। लेकिन अज्ञानी सिर्फ और सिर्फ अपने लोगों के बारे में ही सोचता है।

12. ज्ञानी दूसरों के आनंद के लिए कष्ट करता है। लेकिन अज्ञानी अपने ही आनंद के लिए सोचता है।

13. ज्ञानी लोक कल्याण के लिए काम करता है। उसी को बढ़ावा देता है ,और सहकार करता है। लेकिन अज्ञानी ऐसे कार्यक्रमों नहीं करता है, न प्रोत्साहन देता है।

14. ज्ञानी निषिद्ध कर्मो नहीं करता है। इसलिए उसको कष्ट नहीं होता और केवल जो कर्म करना है उसी को करता है। सबको लाभ देने वाला काम ही करता है। इसलिए भविष्य में सब आनंद ही होगा, लाभदायक होगा और दुख नहीं होगा।

लेकिन अज्ञानी सब निशिद्ध कर्म करता हैं। सबको नष्ट करता है, और आखिर में कष्ट मिलता है, और दुख में जीता है।

15. ज्ञानी दूसरों में महानता और विशिष्टता देखता है। लेकिन अज्ञानी दूसरों का कमियों को देखता है। जो लोग दूसरों की कमियों को देखता है तो ज़रूर अज्ञानी है।

16. ज्ञानी अपने कर्मों को धर्म है या नहीं? देखता है। दूसरे लोगों क्या सोचते है, वह उसे नहीं सुनता है। ना ही सोचता है। सिर्फ जो कर्म किया है वह सही है या गलत, को देखता है।

लेकिन अज्ञानी दूसरे लोगों क्या सोचते हैं? वह इस को सुनकर, और जो काम करना था वह भी नहीं करेंगे।

17. ज्ञानी अरिषद वर्गों को सीमित रखता है। लेकिन अज्ञानी सीमित नहीं रखता है । मतलब काम, क्रोध, लोभ, मोह, मध, और माश्चर्य, सीमित नहीं रहता है।

18. ज्ञानी को त्रिकरण शुद्ध होता है। लेकिन अज्ञानी को नहीं होता है।

19. ज्ञानी को धर्म मालूम है । और आचरण में भी होता है। लेकिन अज्ञानी को ना धर्म मालूम है, ना हीं उसका आचरण करता है।

20. ज्ञानी द्वंदों में समस्थिति रखता है। मतलब जीत - हार, ठंडा - गर्मी, निंदा- स्तुति, सुख-दुख, सम्मान - अपमान । लेकिन अज्ञानी को समस्थिति नहीं होता है ।

21. ज्ञानी को अपने बातों पर होश होता है, और कंट्रोल होता है। लेकिन अज्ञानी को दोनों नहीं होता।

22. ज्ञानी सृष्टि का नियमों, धर्म सिद्धांतों को जानता है । उसी प्रकार जीता है। लेकिन अज्ञानी नहीं जानता है और ना हीं जीता है।

23. ज्ञानी सृष्टि के अनुसार जीता है। लेकिन अज्ञानी सृष्टि के विरुद्ध जीता है। क्योंकि वह सब जानता नहीं है।

24. ज्ञानी सृष्टि का नियमों को गौरव करता है। लेकिन अज्ञानी सृष्टि का निर्णय को गौरव नहीं करता है और ऊपर विमर्श करता है। ऐसे करके वह सृष्टि को अपमानित करता है और नष्ट होता है ।

देखिए अगर ज्यादा बारिश होता है कुछ लोग क्या कहेंगे ? गाली देते हैं।

लेकिन उनका क्या मालूम सृष्टि यह क्यों कर रहा है ?

इसी प्रकार ज्यादा गर्मी होने पर भी गाली देते हैं। गर्मी में लोग मर रहे हैं करके बोलते हैं । ऐसे विषयों पर सृष्टि को विमर्श करते हैं ।

लेकिन इस सृष्टि में जो कुछ हो रहा है वह सब को गौरव देना चाहिए। लेकिन अज्ञानी सृष्टि को अपमान करता है, और बहुत नष्ट होता है।

इसलिए अगर आप इन सारे विषयों में कुछ पालन नहीं कर रहे हैं, मतलब आपको उन पर अवगाहन नहीं है।

इसलिए उन पर अवगाहन बढ़ाना चाहिए ।

देखिए अज्ञानी धर्म को पालन नहीं करता है। क्योंकि उसको धर्म के बारे में जानता नहीं। और धर्म को नहीं पालन करने पर उसका नष्ट भी नहीं जानता है । उनका परिणाम कितना कठिन होगा, उनको मालूम नहीं है ।

इसलिए ऊपर वाले विषयों पर कुछ पालन नहीं कर पा रहे हैं, तब उसको पढ़ना चाहिए । सृष्टि के नियमों और सिद्धांतों पर अवगाहन होना चाहिए । अगर नहीं है तब जानना चाहिए और पालन करना चाहिए । यह सब ज्ञानी लोगों को समझ आता है।

इसलिए ज्ञान प्राप्त कीजिए । आध्यात्मिक त्रिरत्नों को आचरण में लाइए ।

ज्ञान प्राप्त करने से क्या-क्या लाभ है ?

यह ज्ञान हमारे साथ में आती है , इसलिए इसके ऊपर किसी को भी आशक्ती रहना चाहिए तो, पहले उसको प्राप्त करने में, क्या-क्या लाभों है, उनके बारे में जानते हैं ।

इस ज्ञान मार्ग में लाखों लोग आ चुके हैं। लेकिन बहुत ही कम लोग इस ज्ञान पाने को प्रामुखता दिखाते हैं । क्योंकि ध्यान में आने वाले बहुत लोग अपने देह लाभों के लिए, या इच्छाओं को पूरी करने के लिए, या अपनी समस्याओं, और अनुभवों पाने के लिए , या शक्ति को बढ़ाने के लिए प्रामुखता देते हैं । मुझे वह दिखा, यह दिखा , पिछले जन्म देखा, मुझे तीसरी आंख खुल गई, ऐसे कुछ बातें बताते हैं। लेकिन ध्यान इन सब चीजों के लिए बिल्कुल नहीं करते हैं। ध्यान करते हैं, सिर्फ ज्ञान प्राप्त करने के लिए। यह सब बीच में आते ही रहते है, जब हम ज्ञान प्राप्त करने के प्रयास में है।

उदाहरण के लिए, अगर राइस मिल में चावल निकालना है तब हमें पहले उस फसल को डालते है। लेकिन बीच में आने वाले छिलके और पाउडर के लिए नहीं न? अगर कोई भी बीच में आने वाले छिलके के लिए वह इंतजार करेंगे और उसी से खुश होगा, तब उस आदमी को क्या कहना?

इसी प्रकार ध्यान करने वालों को देखना है की ज्ञान प्राप्त हुआ कि नहीं। यह नहीं देखना है कि उसको कष्टों दूर हुआ था नहीं, या कुछ इच्छाओं पूरी हुआ, क्या अनुभव मिला था, यह कुछ लाभ हुआ, मतलब.....वह सब बड़े-बड़े लाभ है क्या? ध्यान करने के बाद, ज्ञान प्राप्त करने से पहले, यह सब सहज रूप से हो जाते हैं। यह सब साइड प्रोडक्ट्स है।

जब फसल को यंत्र में डालते हैं, चावल असली प्रोडक्ट है, बाकी सब साइड प्रोडक्ट्स है। मगर चावल के इंतजार नहीं कर कर, सिर्फ, साइड प्रोडक्ट से ही संतुष्ट हो जाएगा, तब उस आदमी को क्या कहना है ? वह मूर्ख है न? जो असली प्रोडक्ट को छोड़कर, साइड प्रोडक्ट से संतुष्ट हो रहा है।

इसी प्रकार ध्यान करते वक्त ज्ञान प्राप्त करने से पहले, आने वाले सारे साइड प्रोडक्ट्स है। असली प्रोडक्ट है 'ज्ञान'। इस 'ज्ञान' के अलावा, कुछ और लाभ के लिए देखने वाला, या रोग को ठीक करने वाला, उस को कम बुद्धि वाला और मूर्ख कहते है।

इसलिए ज्ञान का महानता अभी जानते हैं। ज्ञान प्राप्त करने से लाभों के बारे में नहीं जानते हैं। इसलिए रोगों को ठीक करने पर, या संपत्ति इकट्ठे करने पर, ध्यास रखते हैं, संसार पर ध्यास रखते हैं। लेकिन कोई भी ज्ञान पर ध्यास नहीं रखते हैं। इसलिए पहले इस ज्ञान प्राप्त करने से लाभों के बारे में जानते हैं।

ज्ञान प्राप्त करने से मुख्यतः दो तरह की लाभ होते हैं।

1. इस लोक में प्राप्त करने वाले लाभों।

2. परलोक में प्राप्त करने वाले लाभों ।

यह दोनों के बारे में जानने से पहले, ज्ञान का मतलब जानते हैं ।

ज्ञान का मतलब, 'जो है, उसको जानना है'। इस ज्ञान का पराकाष्ठ है, 'विज्ञान'। विज्ञान का मतलब, जिसको जाना उसको आचरण में लाना है।

तब इस सृष्टि में क्या है? एक ही है। वह है 'आत्मा'। 'आत्मा' को जानना ही 'ज्ञान' है। पत्री जी कहते हैं कि, 'मैं देह नहीं हूं, मैं आत्मा हूं', को जानना ही, 'ज्ञान' है । क्योंकि यह सृष्टि में एक ही है। 'आत्मा'। उस आत्मा को जो जानता है, वही है ज्ञानी ।

बाकी सब लोग अज्ञानी है। जो आत्मा को जानता है, वह अपनी समस्याओं से, और कठिनाइयों से, और दुख से बाहर निकलता है। जो नहीं जान सकते हैं, वह अज्ञानता में है। वह जितने भी जन्म लेंगे, वह अनंत दुख सागर में और नरक का अनुभव करता रहता है।

इसलिए इस 'ज्ञान' प्राप्त करने से, आने वाले लाभों के बारे में जानते हैं ।

1. इस लोक में प्राप्त होने वाले लाभों :

1.ज्ञानी को स्पष्ट होता है कि वह देह नहीं है बल्कि आत्मा है। और न केवल खुद आत्मा है सारे लोग आत्मा ही है, का समझ आता है।

2. ज्ञानी जब जानता है कि सब आत्माएं हैं, उसको समझ आता है कि सब एक ही है और समान है।

जैसे अन्नामाचार्य जी ने कहा है न? ब्र्मं और परब्र्मं एक ही है, आगे कहते हैं कि ....

'कोई भी अधिक नहीं, और ना कोई हीन है क्योंकि सब के अंदर श्रीहरि ही अंतरात्मा है'।

मतलब इस सृष्टि में हीन जाती और अधिक जाती, कुछ नहीं है। हीन आदमी या अधिक आदमी, कोई नहीं है। मतलब सबके अंदर श्री हरि ही अंतरात्मा है। जब ज्ञानी को यह समझ आता है वह ना किसी को द्वेष करता है, किसी को अपमान, या नष्ट नहीं करता ,और ना ही किसी को कष्ट देता है।

3. ज्ञानी किसी जीव को हिंसा नहीं करता है।

और मुख्यतः मांस नहीं खाता है । इसलिए उसको रोग और कष्ट नहीं होता है ।

4. ज्ञानी को जीवन में कष्ट नहीं होता है। अगर है भी तो, उनको आराम से या संतोष से अनुभव करता है।

5. ज्ञानी सब प्राणियों के साथ, और मानव के साथ दोस्ती बनाता है।

तभी जब ऐसे लोग जंगल में तपस्या करते हैं, और कोई भी जानवर उनको कुछ नहीं करता है।

6. ज्ञानी इस देह को ज्यादा प्रामुखता नहीं देता है। क्योंकि उसको मालूम है कि वह शाश्वत नहीं है। और इस देह से आत्मा को लाभदायक कर्मों ही करता है।

7. ज्ञानी 'श्वास पर ध्यास' रखकर कठोर ध्यान साधना करता है।

8. ज्ञानी समय को बर्बाद नहीं करता है । न केवल समय, अपना धन, वाक , शक्ति और बुद्धि को, और जीवन को बेकार नहीं करता है। सब चीज़ें,

अपना आत्मा का उन्नति के लिए उपयोग करता है।

9. ज्ञानी माया के ऊपर विजय प्राप्त करता है। और माया से बाहर निकल जाता है।

10. ज्ञानी, ज्ञान प्राप्त करने से सारे कर्मों को दग्ध करता है। और दुःख से बाहर, आ जाता है।

11. ज्ञानी को मालूम है कि वह आत्मा है और उसको मालूम है कि वह नहीं मरेंगे।

12. ज्ञानी मौत से नहीं डरता है। क्योंकि उसको मालूम है किसी को मौत नहीं है।

13. ज्ञानी मरने के बाद का जीवन के बारे में पहले ही जानता है। इसलिए जीवन में बहुत लाभ उठाता है।

14. ज्ञानी पृथ्वी पर सिर्फ मरने के बाद आत्मा को लाभदायक वाले कर्मों ही करता है।

15. ज्ञानी को मालूम है की मौत लाभदायक है। क्योंकि ज्ञानी उच्च लोकों में पहुंचता है। बाद में महान जन्मों लेता है। इसलिए मौत से नहीं डरता है।

मरने के लिए तैयार रहता है और बता कर भी मरता है।

16. ज्ञानी को मरने के बाद मालूम होता है क्या होगा, इसलिए जीवन में सब चीज पर ममकारें छोड़ देता है। मुख्यतः अपनी पत्नी, या पति, या बच्चों पर, धन पर, ममकारें छोड़ देता है।

17. ज्ञानी को सब मालूम है, इसलिए मौत भी त्यौहार है।

18. ज्ञानी लोगों का व्यवहार, कर्मों, प्रामुखतायें, और जिम्मेदारियां, और बातें भी बदल जाते हैं ।

19. ज्ञानी को हर प्रकार का भौतिक विषयों पर व्यामोहों को छोड़ देता है। मतलब पदों पर, अवार्ड, रिवॉर्ड, मेडल आदि पर व्यामोह नहीं होता है। और इन विषयों के लिए अपना जीवन बेकार नहीं करता है।

20. सबसे अधिक या महान होने का इच्छा नहीं रखता है, ज्ञानी। और इस विषय पर अपना जीवन बेकार नहीं करता है। और ना पाप करता है, ना गलतियां करता है, ना ही अधर्म का व्यवहार करेगा।

21. ज्ञानी अपने साथी लोगों को ज्ञानी बनाने को कोशिश करता है। इसलिए सबका गौरव पाता है।

इसलिए ज्ञानी को, इस पृथ्वी पर सारे लाभों ही है।

2. परलोक में प्राप्त होने वाले लाभों :-

1. ज्ञान प्राप्त करने से उनको सब पर ममकार छोड़ देता है इसलिए मरने के बाद पृथ्वी को भी छोड़ देता है उसको मालूम है कि पृथ्वी पर उसका काम खत्म हुआ है और वह अपने सहायकों, जो लेने आते हैं, उनके साथ चले जाते हैं।

2. उनको मालूम है कि उनकी पत्नी, बच्चों या धन, संपत्ति, शाश्वत नहीं है। इसलिए उन पर ममता नहीं रखता है इस ज्ञान प्राप्त करने से ऊपर लोकों को चले जाने से प्रेत आत्मा नहीं बनता है। उस ऊपर लोकों को जाकर अपने आगे की कार्यों पर दृष्टि रखता है। इसलिए बहुत समय का बचाव करता है। नहीं है तो अगर वह प्रेत आत्मा बन जाता है, बहुत हजारों साल भी नष्ट कर सकता है ।

3. ज्ञानी अपना जीवन का लक्ष्य पूर्ण आत्मा बनना है को जानता है और अपना जीवन का गम्य स्थान, सत्य लोक पहुंचना है यह भी जानता है

4. ज्ञान प्राप्त करने से उनको मालूम पड़ता है इस संसार में बहुत सारे लोकों है। मुख्यतः अपने को ऊपर लोक जैसे महा लोक, तपोलोक, पहुंचना ही नहीं उसके ऊपर सत्य लोक पहुंचना अपना अंतिम लक्ष्य है।

5. ज्ञान प्राप्त करने से जनालोक पार कर, ऊपर लोक में महान लोगों का सांगत्य मिलेगा और उनसे बहुत ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। यह सब भविष्य में उनको बहुत काम आएगा। यह विषयों को जानता है।

6. ज्ञानी ऊपर लोकों में जाता है, इसलिए अगला जन्म अपनी इच्छा से जन्म लेने का अवसर मिलता है, यह विषय जानता है।

7. आत्मज्ञानी प्राप्त करने वालों को, इस पृथ्वी पर जहां रहते हैं उनको मालूम होता है कि, यह परलोक है।

इस प्रकार ज्ञान प्राप्त करने से न केवल इस लोक में, परलोक में भी बहुत सारे लाभ मिलता है । अपना लक्ष्य को प्राप्त करता है, और गम्य स्थान पहुंचता है। इसलिए जो शाश्वत नहीं है उसको प्रामुखता नहीं देता है। साथ में आने वाले विषयों पर, रहने वाले विषयों पर प्रामुखता देता है ।

तब महर्षि वशिष्ठ जी का कहा हुआ आध्यात्मिक त्रिरत्नों ,

1. श्वास पर ध्यान।

2. आध्यात्मिक पुस्तकों का पठन।

3. आध्यात्मिक गुरुओं का प्रवचन सुनना या संदेशों सुनना।

यह सब हर रोज़ करना चाहिए। अपना खाली समय ज्ञान प्राप्त करने के लिए उपयोग करना है । मौज, मस्ती के लिए और समय बिताने के लिए, उपयोग नहीं करना है । इसलिए कोई भी अपने साथ में आने वाले विषयों को प्रामुखता देना चाहिए ।

श्री तटवर्ती वीरा राघवराव का हिन्दी किताब

1)	आत्म शास्त्र ।	Rs.200/-
2)	ध्यान विद्या ।	Rs.160/-
3)	भगवद् गीता का सार ।	Rs.160/-
4)	एक और जन्म ।	Rs.160/-
5)	सत्य मार्ग ।	Rs.160/-
6)	'गाइडिंग' ध्यान क्यों नही ?	Rs.120/-
7)	भगवान कौन हैं।	Rs.120/-
8)	कर्म सिद्धांत ।	Rs.120/-
9)	विज्ञान का अर्थ - निहितार्थ	Rs.120/-
10)	मरने से पहले मरना है।	Rs.130/-
11)	ब्रह्म ज्ञान।	Rs.100/-
12)	यह जीवन क्यों हैं ?	Rs.100/-
13)	मरने के बाद, साथ में आने वाले विषयों ।	Rs.80/-
14)	भागवत के दृश्यों का अर्थ	Rs.80/-
15)	दुख निवारण का मार्ग	Rs.75/-
16)	आर्थिक स्थिति बढ़ाना है तो ?	Rs.60/-
17)	क्या हम इस लोक के वासी हैं या परलोक के वासी हैं?	Rs.50/-

For Books Please Contact :

TATAVARTHI VEERA RAGHAVARAO

BHIMAVARAM. Ph: 94403 09812

इस जन्म में कष्ट कर कर हमने जो हासिल किया है वह बेकार नहीं होगा। इस जन्म में जो भी सीखा है, हासिल किया है, वह अगले जन्म में उपयोग होगा। कुछ भी बेकार नहीं होगा। सब समझते हैं कि मरने के बाद कुछ भी नहीं रहेगा। लेकिन मरने के बाद भी, हम रहेंगे। हमारा कर्मों और जो भी हासिल किए हैं, वह सब साथ में आएंगे ।

इसलिए जानते हैं क्या-क्या विषय है जो हमारे साथ में आने वाले हैं। और हमारे साथ में आने वाले विषय चार प्रकार के होते हैं।

1. वासनाएं, 2. संस्कार, 3.कर्मों, 4.ज्ञान

यहां वासनाएं है मतलब एक प्रकार अपने इच्छाओं कह सकते हैं। संस्कारों मतलब अपना आदतें । कर्मों मतलब अपना किए हुए काम और बातें। ज्ञान मतलब जो आत्मा को लाभ देने वाले , आत्मा की उन्नति देने वाले।

यह सब अपनी आंखों को नहीं दिखता, लेकिन मरने के बाद, साथ में आएंगे।

Rs .80/-